Dr. Kirti kumar akhand

संक्षिप्त कौमारभृत्य

(Short notes for Ayurved Entrance Examination)

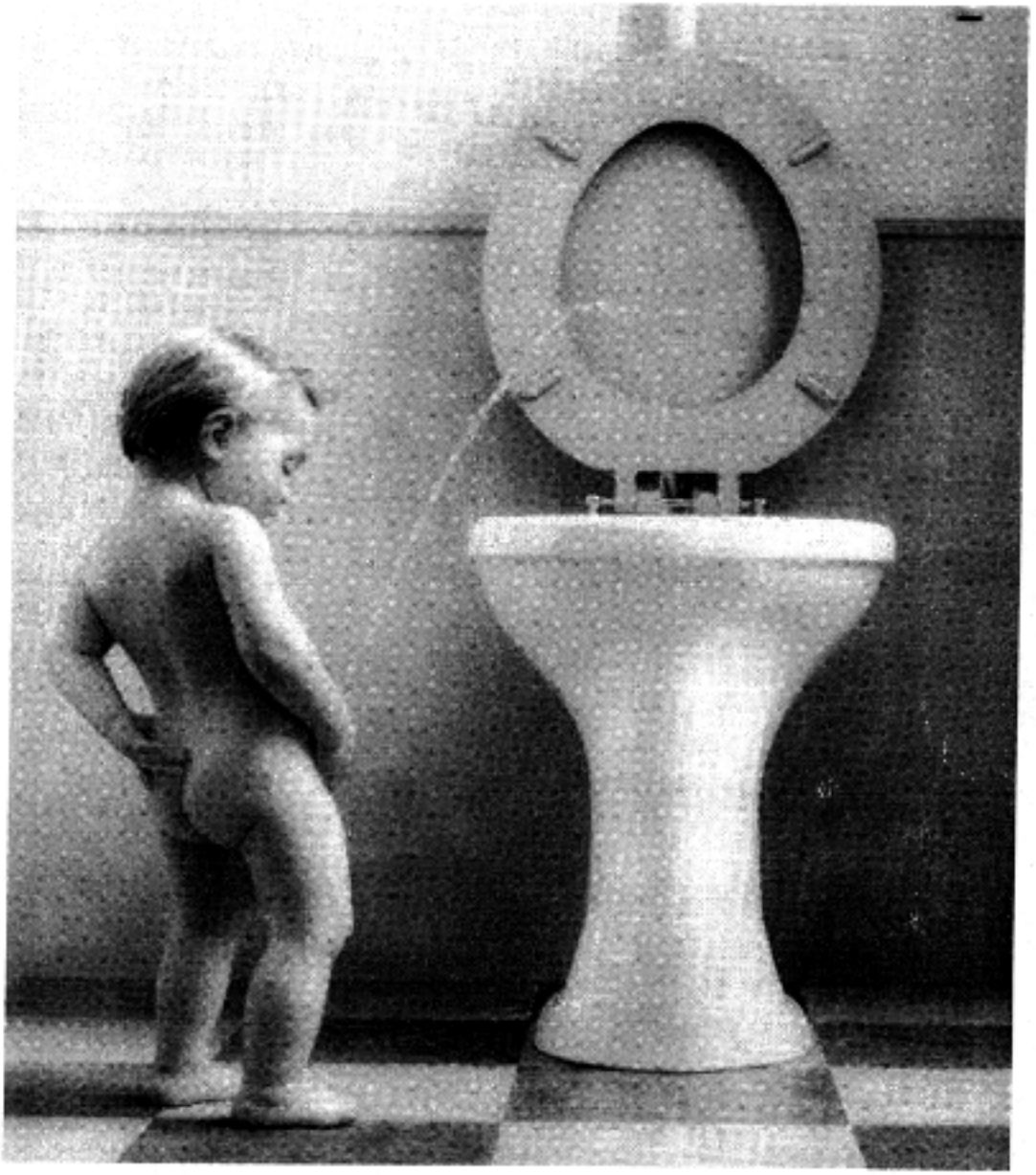

डॉ.अखिलेश भारद्वाज

डॉ.उपासना भारद्वाज

कौमारभृत्य

❀परिभाषा (सुश्रुत) –कौमारभृत्यं नाम कुमारभरणधात्री क्षीर दोष संशोधनार्थ,
दुष्टस्तन्यग्रहसमुत्थानां च व्याधीनामुपशमानार्थम्।। (सु.सू. 1/13)

❀हारीत के अनुसार – बालचिकित्सा में – गर्भोपक्रम विज्ञान, सूतिकोपक्रम, बालरोग शमनम् का समावेश है।

❀चक्रपाणि – "कुमारस्य भरणमधिकृत्य कृतं कौमारभृत्यम् ।"

❀काश्यप के अनुसार कौमारभृत्य समस्त अंगों में सबसे प्रधान व आदि अंग है।

❀अष्टांग आयुर्वेद में कौमारभृत्य को काश्यप ने प्रथम, वाग्भट ने द्वितीय, सुश्रुत ने पंचम एवं चरक ने छटाँ स्थान प्रदान किया है।

❀कौमारभृत्य संबंध तंत्र –

- •काश्यप संहिता (वृद्धजीवक तंत्र)
- •पर्वतक तंत्र
- •हिरण्याक्ष तंत्र
- •बंधक तंत्र
- •योगसुधानिधि
- •बालचिकित्सामृत

❀कौमारभृत्य के अन्य ग्रन्थ –

- •बालकुमार तंत्र – रावण
- •बालतन्त्र – कल्याणवैध
- •कुमार तन्त्र – यामिनी भूषण
- •बालरोगचिकित्सा – दशरथ गुरु एवं मेघनाथ
- •बालग्रहचिकित्सा – जैन मुनि देवेन्द्र

❀वय विभाजन–

•चरकानुसार	वाल्यावस्था	–	जन्म से 30 वर्ष	1–16वर्ष – कफ की अधिकता 16 – 30 वर्ष – धातु वृद्धि	
	मध्यावस्था	–	30 से 60 वर्ष		
	वृद्धावस्था	–	60 से 100 वर्ष		
•भावप्रकाशकार	बाला	–	16 वर्ष तक	कुमार	– 5 वर्ष तक
	तरूणी	–	16–32 वर्ष	पौगण्ड	– 10 वर्ष तक
	प्रौढ़	–	32–50 वर्ष	किशोर	– 16 वर्ष तक
•सुश्रुतानुसार	बाल्यावस्था	–	क्षीरप 1 वर्ष तक क्षीरान्नाद 1–2 वर्ष तक अन्नाद 3वर्ष से 16 वर्ष		
	मध्यावस्था	–	वृद्धि 16–20 वर्ष यौवन 20–30 वर्ष सम्पूर्णता 30–40 वर्ष हानि 40–70 वर्ष		
	वृद्धावस्था	–	70 वर्ष से मृत्यु तक		
•काश्यपानुसार	गर्भावस्था	–	जन्म तक		
	वाल्यावस्था(क्षीरप)	–	1 वर्ष		
	कौमारावस्था(अन्नाद)	–	1–16 वर्ष		
	यौवनावस्था	–	16–34 वर्ष		
	मध्यमावस्था	–	34–70 वर्ष		
	वृद्धावस्था	–	70 से मृत्युपर्यन्ता		

Age dividation due to paediatrics

No	Division	Sub division	age
1.	Prenatal	A. Fertilized ovum(Zygote)	0 - 14 days
		B. Embryo	14days - 9 weeks
		C. Foetus	9 weeks - Birth
2.	Perinatal	-	The period begining after the 28th week of pregnancy to 7 days after birth.
3.	Postnatal	A. Early neonate	Birth - 7 days
		B. Late neonate	7 days - 1 month
		C. Infant	Up to 1 year
		D. Todler	Up to 3 year
4.	Pre School Child	-	3 - 5 year
5.	School going Child	-	5 - 10 year - Girls & 5 - 12 year - Boys
6.	Adolesense	A. Pre Pubrent	10 - 12 year - Girls & 12 - 14 year - Boys
		B. Pubrent	12 - 14year - Girls & 14 - 16 year - Boys
		C. Post Pubrent	14 - 18 year - Girls & 16 - 20 year - Boys

Growth Mnemonic

Age (Months)	0	3	5	7	9	10	11	12 1वर्ष	24 2वर्ष	36 3वर्ष	48 4वर्ष	60 5वर्ष	84 7वर्ष	120 10वर्ष
Weight (Kg.)	3		दुगना					3गुना	4गुना	5गुना		6गुना	7गुना	10गुना
Hight (Cm.)	50							75	90		100			
Headcircum.(Cm)	35							45					50	

•Neonate के Brain का wt. - 370 - 400 gm. होता है जो कि 1वर्ष में दुगना हो जाता है।

●जन्मकालीन स्वस्थ शिशु के लक्षण–

•औसत भार – 2.5 kg- 3 Kg. or 6 ½ पौंड

•औसत लम्बाई – 50 cm.

•Umbilical cord length - 50 cm.(average)

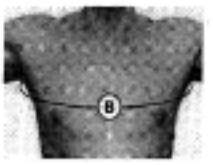

•Head Circumference - 35 cm
•Chest Circumference - 32 cm
> Both become equal by 1-2 year

•Chest Circumference should be recorded at the level of xiphisternal junction.

•Pulse Rate at birth - 140/mt.

•Respiratory Rate - 38/mt.

♦Pulse rate and respiratory rates are double that of adults and blood pressure is half of adults roughly.

•B.P. - 80/50 or 60/40

•Temperature - 97^{0}F (कारण– Newborn is very thermolabile)

•Blood Volume- 80ml / Kg Body weight.

•Hb - 18-20 gm %

•A new born requires - 100 Cal/ Kg body wt.

•No. of ossification centers at birth - 5 to 6

•No. of Fontanelle at birth - 6

❀जातमात्र Neonate-

♦जन्म के पश्चात जीवन की अवस्थाओं में सबसे पहली व सबसे छोटी अवस्था

♦दो भाग– 1. सद्योजात – जन्म से लेकर नाभिनाल कटने तक
2. नवजात– नाभिनाल कटने से चौथे सप्ताहांत तक

♦जातमात्र का मुखशोधन सैंधव युक्त घृत से करने का निर्देश है।

♦जातमात्र को बलातैल से अभ्यंग कर क्षीरवृक्षों के कषाय से स्नान कराने का निर्देश है।(सुश्रुत)

♦जातमात्र को स्तनपान प्रारम्भ करवाने का समय – चरक – जन्म के तुरन्त बाद
सुश्रुत व वाग्भट् – चौथे दिन

♦जातमात्र को सुश्रुत ने – •जन्म के प्रथम दिन – अनन्त(स्वर्ण)से मिश्रित मधु+घृत अनामिका से त्रिकालचटायें
•द्वितीय व तृतीय दिन – लक्ष्मणा से सिद्धघृत
•चतुर्थ दिन – शिशु के स्वपाणितल मात्रा के बराबर मधु+घृत चटाकर द्विकाल यथेष्ट स्तनपान करावें।

❀जातकर्म –सद्योजात बालक के माता के जरायु से बाहर आने के समय से लेकर उसके नाभिनाल कर्तन तक के समय के कर्म। यथा– शरीरशोधन, कण्ठविशोधन, प्राणप्रत्यागमन, नाभिनालोच्छेदन

वाग्भट – प्रजापत्येन विधिना जातकर्माणि कारयेत्।

❀APGAR Score –The Apgar score was devised in 1952 by anesthesiologist Dr.Virginia Apgar as a method to assess the health of newborn children(specifically cerebral palsy).

Apgar Scoring System			
Sign	0	1	2
•Appearance or Colour	Pale	Blue	Pink
•Pulse or Heart rate	Absent	<100	>100
•Grimace or Muscles Tone	Absent	Grimace	Cry Active
•Activity	Limp	Some tone	Active
•Respiration	Absent	Irregular	Reg & Cry
Total Score =10	Severe =0-3	Mild=4-7	normal=7-10

❀नाभिनालोच्छेदन– अर्द्धधार से(चरकानुसार)

•चरक– नाभिबन्धन से 8 अंगुल छोड़कर तीक्ष्ण शस्त्र से काटे

•सुश्रुत– नाभिबन्धन से 8 अंगुल मापकर धागे से बांधकर काटे

•वाग्भट– नाभिबन्धन से 4 अंगुल मापकर धागे से बांधकर काटे तथा तत्पश्चात **कुष्ठतैल** परिषेक करे।

❀चरकोक्त नाभि विकार–

•उत्तुण्डिता – मोटी बाहर को निकली हुई।

•पिण्डलिका – पिण्ड के आकार की गोल एवं कठिन

•विनामिका – किनारों से ऊँची, शोथयुक्त, मध्य में दबी हुई

•विजृम्भिका – नाभि का बार–बार घटना या बढ़ना (Umbilical Hernia)

❀चिकित्सा–1. वातपित्त शामक चिकित्सा करे।
2. अभ्यंग, उत्सादन, परिषेचन
3. वातपित्त शामक घृतों से चिकित्सा

❀सुश्रुत ने नाभि विकार में तुण्डीनाभि बतलाया है, जिसमें नाभि वात के कारण फूल जाती है एवं अत्यन्त वेदना होती है।

❀वृद्धवाग्भट ने नाभि विकार 2 बतलाये है – आयाम एवं व्यायाम से विनाम व विजृम्भिका

❀नाभिपाक एवं नाभिकुण्डल का वर्णन मिलता है – रसरत्नसमुच्चय में

❀अहितुण्डिका रोग का वर्णन किया है – चक्रपाणि ने

❀नवजात शिशु परिचर्या में उपक्रम –

क्र.	चरक	सुश्रुत	वाग्भट्
1.	प्राणप्रत्यागमन (अश्मनोः संघट्टन)	उल्वापरिमार्जन	उल्वा परिमार्जन (सैन्धव व घृत से)
2.	शीतोदकेनोष्णोदकेन वा मुख परिषेकः	मुखविशोधन	प्राणप्रत्यागमन (अश्मनोर्वादनं व दक्षिण कर्ण में मंत्र)
3.	स्नान	पिचुधारण	नालच्छेदन "संजीव शरदां शतम"
4.	मुखविशोधन	नालच्छेदन	स्नान (क्षीरीवृक्षकषाय से)
5.	गर्भोदक वमन सैन्धव + घृत से	जातकर्म	पिचुधारण
6.	नालच्छेदन	स्नान	मेधा,आयु,बल वर्धक कल्क सेवन (हरेणु प्रमाण में)
7.	जातकर्म मधु + घृत चटायें	–	स्वर्णप्राशन (मधु + घृत से)
8.	प्रथम दिन ही **दक्षिणस्तन** से स्तनपान	–	गर्भोदक वमन (सैन्धवमिश्रित घृत से)
9.	रक्षाकर्म		जातकर्म

❀**संस्कार** –

क्र.	संस्कार	काश्यप	सुश्रुत	वाग्भट्
1.	स्तनपान संस्कार	जन्म से 3 – 4 दिन पश्चात		
2.	दुग्धपान संस्कार	जन्म से 1 माह पश्चात		
3.	नामकरण संस्कार	10वें दिन (कभी–कभी 101 वे दिन या 1 वर्ष तक)		
4.	रक्षाकर्म	जन्म के प्रथम मास में		
5.	सूर्य व चन्द्रदर्शन	जन्म के प्रथम मास में ही		
6.	निष्क्रमण संस्कार (देवालय दर्शन)	4 माह	——	4 माह
7.	उपवेशन या भूम्युपवेशन संस्कार	6 माह	——	5 माह(अ.हृ.), 5माह बाद(अ.सं.)
8.	फलप्राशन	6 माह	———	———
9.	अन्नप्राशन	10 माह	6 माह	6 माह
10.	कर्णवेध	6–7–8 माह(शुक्लपक्षमें)	6 या 7 माह	6–7–8 माह(शुक्लपक्ष)
11.	अक्षरलेखन संस्कार	5 वर्ष	शक्तिमंत हो जाने पर	

❀महर्षि दयानन्द ने 'संस्कार विधि' इनकी विवेचना की है, प्रमुख संस्कारों की संख्या – 16 है।

1. गर्भाधान संस्कार – पुरुष 25 वर्ष एवं स्त्री 16 वर्ष की हो।
2. पुंसवन संस्कार – गर्भधारण के दूसरे या तीसरे मास में करते है।
3. सीमन्तोन्नयन संस्कार – बालक की बौद्धिक शक्तियों की वृद्धि की कामना हेतु गर्भस्थापन के चौथे महीने (कभी छटे या आठवे माह में भी) में शुक्ल पक्ष में करते है। (वाग्भट्)
4. जातकर्म संस्कार – शिशु के पैदा होने के बाद उसे जीवित व स्वस्थ रखने हेतु आवश्यक कर्म।
5. नामकरण संस्कार– जन्म के 11वें, 101वें दिन या दूसरे वर्ष में करने का निर्देश है।
6. निष्क्रमण संस्कार – चौथे महीने में जिस तिथि में बालक उत्पन्न उसी तिथि को।(वाग्भट्)
7. अन्नप्राशन – छठे महीने में (वाग्भट्) दसवें महीने में (काश्यप)
8. **चूड़ाकर्म या मुण्डन संस्कार** – 3 या 5वें वर्ष में (काश्यप सूत्र 21 चूड़ाकरणीय अध्याय में भी)
9. कर्णवेधन संस्कार – 6 या 7वें महीने में (सुश्रुत)
10. उपनयन संस्कार – बालक का आध्यात्मिक जीवन मे प्रवेश अर्थात दूसरा जन्म
11. वेदारम्भ संस्कार – उपनयन संस्कार के ही दिन या 1 वर्ष के अन्दर करने का निर्देश है।
12. समावर्तन संस्कार – 25 वर्ष की आयु तक विद्याध्ययन करने के पश्चात विदाई समारोह।
13. विवाह संस्कार –
14. वानप्रस्थ संस्कार –
15. सन्यास संस्कार –
16. अन्त्येष्टि संस्कार –

❀कुमारागार – •Children's Ward Room •चरक द्वारा वर्णित
❀कुमाराधार – •Male Nurse for child •वाग्भट द्वारा वर्णित
❀बालक्रीडनक – •Children's Toys •चरक द्वारा वर्णित
❀चरक ने 'कुमार' शब्द नवजात शिशु (New Born) के लिये प्रयुक्त किया।
❀शार्ङ्गधर ने 22 बालरोगो व 12 बालग्रहों का वर्णन किया।
❀काश्यप ने 4 माह तक बालकों में 'हस्तस्वेदन' का निर्देश किया है।
❀चरक ने स्तनपान **प्रथम दिन** ही अभिमंत्रित मधु + घृत चटाने के पश्चात माता को **पूर्वाभिमुख** होकर **दक्षिणस्तन** से कराने का निर्देश।

❀स्तन्यपान के निर्देश–
- ♦स्तन्यपान की मात्रा प्रथम दिन माता के स्वपाणितल मात्रा के बराबर कही है।
- ♦माता के दुग्ध के अभाव में दो धात्री रखना चाहिये (वाग्भट्)
- ♦चरक एवं सुश्रुत ने समान वर्ण की (ब्राह्मणादि) धात्री का विधान किया है।
- ♦तत्पश्चात सुश्रुत ने विशेष रुप से श्यामा वर्ण की धात्री का विधान किया है।
- ♦धात्री के अभाव में अजादुग्ध या फिर गौदुग्ध दे।
- ♦या फिर केवल लघुपंचमूल या शालपर्णी, प्रश्निपर्णी से सिद्ध दुग्धपान कराये।
- ♦पीयूष (प्रसूता के प्रथम 3 दिन का दूध) गुरू व कफकारक होने से बालकों में निषेध है।

❀ वाग्भट के अनुसार दंत निकलने के पश्चात (after 8th Month) बच्चे को धीरे–धीरे दूध छुड़ा देना चाहिये।

❀क्षीर महिमा–
- ♦चरक – 'क्षीर जीवनया'।
- ♦वाग्भट्– 'मातुरेव पिवेत्स्तन्यं तद्धयलं देहवृद्धये'
- ♦काश्यप – 'क्षीरं सात्म्यं हि बालानां क्षीरं जीवनमुच्यते'। का.खि.22

❀स्तन्य के गुण–
- ♦चरक –जीवनम्, वृहणम्, सात्यम्, स्नेहनम्, रक्तपित्त में नस्य व नेत्रशूल में तर्पण हेतु श्रेष्ठ
- ♦सुश्रुत –मधुर, कषाय अनुरस, शीतल, पथ्यं, जीवनम्, लघुदीपनम् नस्य व अश्चोतन कार्य के लिये उत्तम्
- ♦वाग्भट्–वातज, पित्तज, कफज एवं अभिघातजन्य अक्षिरोगो में तर्पण,आश्चोतन व नस्य हेतु।

❀स्तन्यवर्धन–
- ♦चरक व काश्यप के अनुसार – सीधु को छोड़कर अन्य मद्य स्तन्यवर्धक है।
- ♦दुग्धोत्पादक कारणों में सबसे प्रधान कारण वात्सल्य है।
- ♦मानसिक तनाव, भय, चिंता, शोक, क्रोध स्तन्यनाश का प्रधान कारण है।
- ♦स्तन्यवर्धक द्रव्यों में – शतावरी (जबकि चरक ने स्तन्यजनन महाकषाय में तृणपंचमूल आदि द्रव्य रखे है, शतावरी नहीं))
- ♦काकोल्यदि गण स्तनजनन है।
- ♦सुश्रुत ने मुस्तादिगण को स्तन्यशोधक व योनिदोषहर बताया है।
- ♦सुश्रुत ने वचादि, हरिद्रादि व मुस्तादि गण को स्तन्यशोधक कहा।
- ♦स्तन्यशोधक रस तिक्त है।

❀ चरकानुसार स्तनसम्पत् –6
- ♦नात्यूर्ध्व स्तन ♦नातिलम्ब ♦नातिकृश
- ♦नातिस्थूल स्तन ♦युक्तपिप्पलकौ ♦सुखप्रपानो

❀ असम्पत् स्तन –

♦उर्ध्व स्तन – करालता (सु.), उर्ध्वदृष्टि (अं.सं.)

♦लम्बस्तन – श्वासावरोध

♦अतिस्थूल स्तन – ग्रीवाभंग

❀शुद्ध स्तन्य के लक्षण – (सुश्रुत) स्वच्छ, पतला, शीतल, पाण्डुरम, रस – मधुर, जल में डालने पर घुल जाये, विकृत वर्ण रहित हो उसे प्रसन्न (शुद्ध) दुग्ध कहते है।

❀क्षीर दोष (चरक 8) – "अष्टो क्षीर दोषाः इति–वैवर्ण्य, वैगन्ध्य, वैरस्यं, पैच्छिल्यं फैनसंघातो, रौक्ष्यं, गौरवमिति, स्नेहश्चिति।"

❀दोषानुसार क्षीरदोष – वातज – **वैरस्य**, फैनसंघातो, रौक्ष्यं

पितज – **विवर्णता, वैगन्ध्य**

कफज – स्नेहयुक्त, पैच्छिल्यं, गौरवम् (च.चि 30/237)

❀क्षीर दोष (हारीत 5) – घन, उष्ण, अम्ल, अल्प, क्षार

❀दूषित क्षीर पानजन्य रोग एवं चिकित्सा– (च.चि.30)

दुग्ध	–	रोग	दुग्ध	–	रोग
1. वैरस्य		–कृशता (पंचकोलादि लेप)	5. **वैगन्ध्य**	–	**पाण्डु, कामला** (सारवादि लेप)
2. **फैन**		**–शिरोरोग, पीनस**	6. पिच्छिल	–	शोथ
3. रुक्षता		–बलनाश (पंचमूल लेप)	7. गुरू	–	हृदयरोग
4. **विवर्ण**		**–तृष्णा, पिपासा, मिन्नविट्**	8. अतिस्निग्ध	–	वमन, अतिलालास्त्राव निद्रा, क्लम, श्वास, कास, प्रसेक

❀वर्णानुसार गौदुग्ध के गुणदोष –

वर्ण –	दुग्ध	•अन्य दुग्ध		
1. कृष्ण –	वातशामक	1. अजादुग्ध	–	ग्राही
2. पीत –	वातपितशामक	2. महिषीदुग्ध	–	अभिष्यन्दी
3. श्वेत –	कफकारक	3. गौदुग्ध	–	रेचक
		4. जिसका शिशु न हो	–	त्रिदोषकारक

❀दुग्धघटक –

क्र.	दुग्ध	प्रोटीन%	Fat	Sugar	Ca	Water	Calories	श्रेष्ठता क्रम
1.	पीयुष	8.7	2.3	5.2	.10	86	58	–
2.	स्त्रीदुग्ध	1.1	3.8	**6.8**	.10	87	75	1
3.	गधीदुग्ध	2.1	1.5	6.2	–	89.9	68	2
4.	अजादुग्ध	3.3	4.5	4.6	.12	85	72	3
5.	गौदुग्ध	3.5	3.7	4.9	.17	87	66	4
6.	भैंसदुग्ध	**4.3**	**8.8**	5.1	**.21**	81	**117**	5

❀स्त्री दुग्ध में Ig-G, Ig-A पायी जाती है।

❀शुद्ध दुग्ध की SG- 1027-1034 होती है।

❀स्तन्य के वर्ण का बालक पर प्रभाव– (काश्यप)

तैलवर्णे **बली** तुल्या घृतवर्णे **महाधनः** ।

यशस्वी धूमवर्णे तु शुद्धे **सर्वगुणो**दितः।। (काश्यप सू. 19/3)

❀हारीत ने 6 प्रकार के स्त्री दुग्ध कहे– घनक्षीरा, उष्णक्षीरा, अम्लक्षीर, अल्पक्षीरा, क्षारक्षीरा, **मृदुक्षीरा**

•इसमें मृदुक्षीर बालक के लिये सुखकारक है

•शेष 5 क्षीर दोषोत्पादक है।

दन्तोद्भवन

❀काश्यप ने इसका विस्तृत वर्णन सूत्र स्थान 'दन्तजन्मिक अध्याय 20' में किया।

❀दन्ताशारीर – अस्थि– रूचक
संधि – उलूखल
भाव – पितृज

❀काश्यप के अनुसार दन्त निषिक्त– रक्त धातु से
वाग्भट् के अनुसार दन्त निषिक्त – अस्थि व मज्जा धातु से

❀शार्ङ्गधर ने दन्त को 'अस्थि की उपधातु' कहा है।

❀दन्तोद्भेद की अवस्थायें – 3

1. निषिक्त– गर्भावस्था में मसूढ़ो में दंताकुंरो का आना 4 माह में दांत निषिक्त हो जाते हैं।
2. मूर्तिमान – दंताकुंरो का बढ़कर दांतों का रूप धारण करना।
3. उद्भेदन – मसूडो को विदीर्ण कर बाहर आना।

❀दन्त भेद–2

1. सकृंजात– जो केवल एक बार निकलते है (8)
2. द्विज (Milk teeth)- जो दो बार निकलते हैं। (24)

❀दन्त प्रकार – 4

क्र.	नाम	आधुनिक नाम	कार्य
1.	राजदन्त	Central Incisor	कर्तन (पवित्र दन्त)
2.	वस्त	Lateral Incisor	कर्तन
3.	दंष्ट्रा	Canine	कठिनद्रव्यों का कर्तन
4.	हानव्य	Bicuspid & Molars	चर्वण

❀दन्त उत्पत्ति के प्रकार–4

1. सामुदग् – क्षयज बार–बार टूट कर गिरते है।
2. संवृत – मैले दांत
3. विवृत – ओंठो से न ढके मैले व लार गिरती है।
4. दन्तसम्पत्त – आंठवे मास में निकले दांत– श्रेष्ठ व सर्वगुण सम्पन्न

❀काश्यप के अनुसार– जितने माह में दाँतों का निषेचन होता है, उतने ही दिनों में वे फूटकर बाहर निकलते हैं उतने ही वर्षों में वे गिरकर पुनः निकल आते हैं।

❀काश्यप के अनुसार **बालिका** (Female Baby) में दन्तोत्पत्ति पहले होती है तथा Male की तुलना में दांत मृदु व सुषिर होते हैं।

❀दांतों में विभिन्न भिन्नताओं (कम, अधिक, टूटे, कराल आदि) का होना अशुभ है।
शन्ति उपाय– 'मारूति–इष्टि यज्ञ' कराये (काश्यप)

❀वाग्भट ने दांतो के साथ पैदा हुये बालक के लिये 'नैगमेष ग्रह' की पूजा का विधान किया है।

❀दन्तोद्भेद् काल – काश्यप – 4 – 8 वें मास तक
अ.सं. – 8 मास (दीर्घपुष्पा)

●दन्तोत्पत्ति काल एव क्रम – 5–8 माह के बीच में निकलना शुरू होते है, तथा $2\frac{1}{2}$ वर्ष की वय तक सभी निकल आते हैं।

●Milk Teethउत्पत्ति काल –

क्र.	दाँतों के नाम	निकलने का समय
1.	Lower Central Incisor	5-10 माह
2.	Upper Central & lateral incisor	8-12 माह
3.	Lower Lateral incisar & upper Lower First Molar	12-14 माह
4.	Canine (eye teeth)	16-22 माह
5.	Second Molar	24-30 माह

●Permanent Teethउत्पत्ति काल –

क्र.	दाँतों के नाम	निकलने का समय
1.	First Molar	5-7 वर्ष
2.	Central Incisor	6-8 वर्ष
3.	Lateral incisor	7-9 वर्ष
4.	First Bicuspid & Second Bicuspid	7-11 वर्ष & 10-12 वर्ष
5.	Canine	11-14 वर्ष
6.	Second Molar	11-14 वर्ष
7.	Third Molar (Wisdom Teeth)	17-25 वर्ष

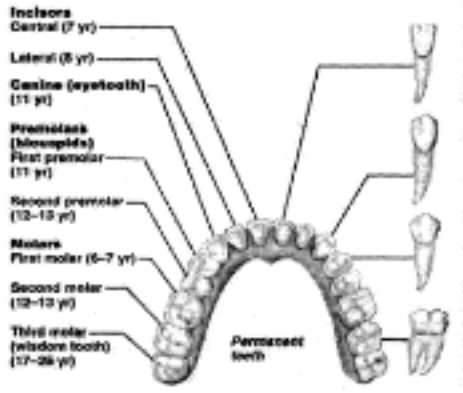

●Milk teeth - 20 - 2102/2102
●Permanent Teeth - 32 - 2123 /2123

●दन्तोद्भेदकालीन व्यधियां –

"दन्तोद्भेदश्च सर्वरोगायतनम्। विशेषेण तु ज्वर शिरोभिताप तृष्णाभ्रमाभिष्यन्दकुकूणकपोथकी वमथुकासश्वास अतिसारविसर्पः।"अ.सं.उ.2/19

"दन्तोद्भेदश्च रोगाणां सर्वेषामपि कारणम्। विशेषाज्वरविड्भेदकासच्छर्दिशिरोरुजाम्।। अभिष्यन्दस्यपोथक्याविसर्पस्य च जायते।"अ.हृ.उ.2/27

●Development of teeth-

1. 4 माह में होने से – अधिदंत रोग, दंतक्षय
2. 5 माह में होने से – दन्तभेद, दंतहर्ष
3. 6 माह में होने से – मलयुक्त, विवर्ण, वक्रदन्त
4. 7 माह में होने से – रेखायुक्त, खण्ड
5. 8 माह में होने से – दन्तसम्पत्त (10 गुणों से युक्त)

●दन्त दोष–8– सदन्तजन्म, पूर्वउत्तरदन्तजन्म, विरलदन्त, हीनदन्त
अधिक दन्त, कराल दन्त, विवर्णदन्त, स्फुटितदन्त

●वाग्भट ने दन्तोद्भवजन्य रोगों में 'काश्यप घृत' का निर्देश किया है।

क्षीरान्नाद कालीन व्याधि

❀कुकूणक (Trachoma/opthalmia neonatarum) दूषित स्तन्यपान से Eyelids में उत्पन्न होने वाला रोग विशेष।

लक्षण	काश्यप	सुश्रुत	वाग्भट्
1. निदान	माता के कुपथ्य, लवण व अम्ल का अधिक सेवन	**स्तन्य प्रकोप से**	**दन्तोत्पत्तिकाल निमित्तज**
2. दोष	कफ + रक्त	कफ+वात+पित+रक्त	-
3. लक्षण	आंखों से निरन्तर पानी,छींक न आना, मन अप्रसन्न,नाक कान कुरेदते रहना मस्तक, आंख, नाक मसलना, वर्त्मशोथ, सूर्यप्रभा न सहना, आंख में खुजली	नेत्रकण्डु, अक्षिकूट ललाट मसलता है, नेत्रवर्त्मशोथ निरन्तर अश्रुश्राव प्रकाश न सहन करना	शोथ व ताम्रवर्ण के नैत्र, देखने में असमर्थता, वर्त्म में शूल व पिच्छिलता बालक कर्ण नासा व नैत्र मलता है।
4.चिकित्सा	•धात्री का वमन व विरेचन •बालकों में कोकिला गुटिका, लोहितिका गुटिका	•बालक का वमन -अपामार्ग से क्षीरान्नाद में - वचा चूर्ण से अन्नाद में - मदनफल से •गुटिकांजन का प्रयोग	•वमनं सर्वरोगेषु विशेषेण कुकूणके। •बालक का वमन एवं विरेचन

•रावणकृत कुमारतन्त्र, योगरत्नाकर, माधवनिदान में कुकूणक क्षीर दोष से उत्पन्न माना गया है।
•हारीत ने स्तन्य में क्षार दोष के कारण कुकूणक उत्पत्ति बतलायी है।

❀तालुकण्टक – (Adenoids)

•तालुमांस में कुपित कफ तालुकण्टक रोग को उत्पन्न करता है।
•लक्षण– तालुपात, स्तनद्वेष, कठिनाई से स्तन्यपान, मल का पतलापन तृष्णा, कण्डु, अक्षिरुजा, वमन, ग्रीवा को सीधा न रख पाना।
•चिकित्सा – प्रतिसारण – यवक्षार + मधु, सोंठ, गोर्बररस (वा.) एवं मधुरगण की औषध से सिद्ध घृतपान (सु.)

❀परिगर्भिक – (Marasmas / Kwashiorkar)

•पर्याय –परिभव, परिभवाख्य, दुधकट्टा, अहिण्डी
•कुपोषण जन्य रोग है।(गर्भिणी स्तन्यपान से)
•लक्षण – कास, अग्निमांद्य, वमन, तन्द्रा, कार्श्य, अरुचि, भ्रम, पेट का बढ़ा होना।
•चिकित्सा – काश्यपानुसार – **"पारगर्भिके रोगे तु पूज्यते वन्हिदीपनम।"**अर्थात दीपन चिकित्सा करें।
वाग्भटानुसार – रोगं परिभ्याख्यं च युंजयात्तत्राग्नि दीपनम्।।

❀अहिपूतना – (Napkin rash or Infentile erythema of Jacquet or Sore buttocks)

•पर्याय (वाग्भट)– प्रष्ठारू, मातृकादोष, अनामिक, गुदकुट्ट(Proctitis)
•रक्त कफ दुष्ट जन्य व्याधि एवं दुष्ट स्तन्यजन्य व्याधि
•मलावरोध के कारण गुद प्रदेश में कण्डु, दाह, तीव्ररुजा, पिडिका होना
•चिकित्सा – 1. मातृस्तन्य शोधन एवं बालक में राग व कण्डू अति होने पर जलौकावचारण करने को कहा है
2. सुश्रुत ने पित्तघ्नी चिकित्सा करने का विधान कर रसांजन का पान व लेप कहा है।
3. रसौत लेप (भैषज्य रत्नावली में रसांजन को गुदपाक की श्रेष्ठ औषध बताया है)
•**पश्चाद्गुज** – भै.र. में वर्णित अहिपूतना के लक्षणों जैसी एक व्याधि जिसमें गुद प्रदेश में जलौका सदृश्य व्रण, दाह, ज्वर व हरितपीत वर्ण का मलभेद होता है। चि.–चन्दनादि लेप
•**गुदपाक** का वर्णन सुश्रुत, भावप्रकाश व भैषज्यरत्नावली में आया है।

❀शैय्यामूत्र – (Eneuresis / Bed wetting)

•सर्वप्रथम वर्णन शार्ङ्गधर ने किया, भावप्रकाश में स्वतंत्र अध्याय के रुप में वर्णन।
•वातदोष के कारण
•शास्त्रोक्त चिकित्सा– अहिफेन + **बिम्बीमूल स्वरस**
•आधुनिक चिकित्सा– कृमिहर चि. + स्तम्भक चि. +मनोबल्य औषधि

❀फक्क – (Rickets) •कुपोषण व क्षीणता जनित रोग

•"बाल संवत्सरा पादाभ्यां यो न गच्छति"। एक वर्ष पश्चात न चल पाना।

•भेद–3 (1) क्षीरज → **श्लेष्म** दुष्टस्तन्य → इसको फक्कदुग्धा कहते है → क्षीरज फक्क

(2) गर्भज → शिशु की माता शीघ्रगर्भवती(गर्भिणीमातृकः) → दुग्ध सूख जाता है(क्षीयते म्रियते वाऽपि) → गर्भजफक्क

(3) व्याधिजन्य → ज्वर आदि से → नितम्बबाहु जंघादि शुष्क → व्याधिजन्य फक्क रोग

•चिकित्साः–

1. कल्याणक घृत, षटपल घृत, अम्रत घृत, से स्नेहन करायें।
2. स्नेहन होने के 7 दिन में – **त्रिवृत्त क्षीर– शोधन**
3. शोधन पश्चात **ब्राह्मी घृत** सेवन
4. **"त्रिचक्र रथम्"**

❀महापद्मक (Erysipelas neonatrum)

••त्रिदोषज व्याधि है, बच्चों में होने वाला विसर्प का ही भेद है।

•प्रकार–2 बस्तिज– हृदय प्रदेश से गुद प्रदेश तक फैलने वाला
शीर्षक– हृदय प्रदेश से शंख प्रदेश तक फैलने वाला

•वर्ण लाल कमल के समान होने से महापदमक् कहलाता है, घातक है।

•चिकित्सा– विसर्पवत

❀क्षीरालसक – पर्याय – अत्यय (अतिपीड़ाकारक)

•त्रिदोष युक्त दुग्धपान के कारण

•लक्षण – मल दुर्गन्धयुक्त, विछिन्न, झागदार, नानावर्णयुक्त व पीड़ाकर, मूत्र पीला श्वेत व घन, बच्चे को ज्वर, अरोचक, प्यास, वमन, शुष्कउद्गार, विजृम्भिका, अंगभंग, अंगविक्षेप, **घाणअक्षिमुखपाक**

•चिकित्सा – दुश्चिकित्स्य, धात्री एवं बालक का वमन करायें , वचादि व निशादि क्याथ

❀परिदग्ध छवि–

•वाग्भट ने वर्णन किया। कुछ विद्वानों के अनुसार Birth Mark है।

•पित्त प्रकोप से

•चिकित्सा– मूर्वा, तिल, उत्पल, शिरीष, सारिवा – प्रदेह

❀उल्बक रोग या अम्बुपूर्ण रोग या सहजरोग (अ.सं.) –

•बालक के गर्भोदक पान कर जाने के कारण हृद्रोग, आक्षेपक, कास, ज्वर व छर्दि आदि रोग हो जाते है। इसे ही उल्बक रोग कहते है।

•चिकित्सा–इसमें स्तनपान व अभ्यंग निषेध है। स्त्रोतो विशोधन करें एवं बिल्वादि घृत एवं अजामूत्र पान प्रशस्त बताया है।

❀पर्वानुप्लव रोग (अ.सं.) –

•हाथों से उठ कर वायु शिशु के सिर, पृष्ठ, मुष्क व फिर पैरों के पर्व को जकड़ देता है, इसे ही पर्वानुप्लव रोग कहते है।

•चिकित्सा–बस्तमूत्र सुरा साधित तैल एवं वातव्याधि की चिकित्सा करते है।

❀उत्फुल्लिका (Pneumonia) – योगरत्नाकर में वर्णित

आध्मानवातसम्फुल्ली दक्षकुक्षौ शिशोर्भवेत्।
उत्फुल्लिका स विख्याता श्वासश्वयथु संकुला।।

•चिकित्सा – बालक के उदर में जलौका लगाकर रक्तमोक्षण करें।

❀शुष्ककास (अ.सं.) –

•चिकित्सा–विशेष रुप से धात्री स्तन्यशोधन एवं घृतभर्जित माषसूप का प्रयोग

❀चर्मदल – •काश्यप ने स्वतन्त्र अध्याय के रुप में वर्णन किया है।

•केवल क्षीरप(स्तन्य दोष से) व क्षीरन्नाद (स्तन्य दोष एवं आहार दोष से) बालकों में

•चर्मदलमिति चर्मावदारणात। स चतुर्विधो –वा., पि., क., सन्नि.

❀कुरण्ड –(Orchitis) – वाग्भट द्वारा वर्णित •पित्तदोष के कारण अण्डवृद्धि

•चिकित्सा – शम्बूक योग एवं बालक में कर्ण के ऊपर सिरावेधन करें।

❀बालशोष (अ.सं.) –

•दिन में अत्याधिक सोने से, शीतल जलपान एवं कफदूषित दुग्धपान करने से रसवाही स्त्रोतस अवरुद्ध होने से बालशोष रोग हो जाता है।

•लक्षण – अरोचक, प्रतिश्याय, ज्वर तथा कास, शिशु सूखने लगता है, मुखमण्डल विशेषतः सूख जाता है।

•चिकित्सा–अश्वविष्ठास्वरस +मधु +मुलेठी या द्विवार्ताकीफलरस या केवल अश्वविष्ठास्वरस पान

❀जलशीर्षक (Hydrocephalus)

•सिर में जल का संग्रह अर्थात जलशीर्ष।also known as "water on the brain," is a medical condition in which there is an abnormal accumulation of cerebrospinal fluid (CSF) in the ventricles, or cavities, of the brain.

•प्रकार–❶जन्मजात Congenital -1) intraventricular matrix hemorrhages in premature infants, 2) infections, 3) Arnold-Chiari malformation, 4) aqueduct atresia and stenosis

❷अर्जित Acquired – 1) CNS infections, 2)meningitis, 3)brain tumors, 4)head trauma, intracranial hemorrhage and is usually extremely painful.

•परीक्षण –❶ X-Ray, Pneumoencephalography

❷USG is the best diagnostic method of hydrocephalus foetus.

❸*MacEwen's* sign is a sign used to help to diagnose hydrocephalus.

Macewen's sign is a sign used to help to diagnose hydrocephalus and brain abscesses. Percussion the skull near the junction of the frontal, temporal and parietal bones will produce a stronger resonant sound when either hydrocephalus or a brain abscess are present.

❹Sunset sign seen in Hydrocephalus

•चिकित्सा –❶Diuretic drugs,

❷Ventriculostomy or Choroidplexectomy

❸ Shunt

❀उदरकृमि व उनकी आधुनिक चिकित्सा –

1. Roundworm or Ascaris Lumbricus	- Piperazine	- पलाश व विडंग
2. Hookworm or Ancylostoma Duodenale	-Bephenium hydrocloride	- भल्लातक व निम्ब
3. Threadworm or Pin worm or Enterobius Vermiacularis	-Piperazine	- निम्ब
4. Tapeworm or Taenia Solium	-Niclosamide	- कम्पिल्लक
5. Entamoeba histolytica	-Metronidazole	- कुटज
6. Giardia Intestinalis	-Metronidazole	- कुटज

☛Albendazole सभी कृमि में हितकर है केवल amoeba एवं Giardia को छोड़कर

Neonatal jaundice or Neonatal hyperbilirubinemia or Neonatal icterus

- This condition is common in newborns affecting 50–60% of all babies in the first week of life.
- Jaundiced newborns have an apparent icteric sclera, and yellowing of the face
- जन्म के समय Sr. Bilirubin 3.5, 1st day- 5 , 2nd day - 9, 3 to 5day-13mg/dl तक हो जाता है।
- Causes - Mechanism involved in physiological jaundice are mainly:
  - ❶Relatively low activity of the enzyme glucuronosyl transferase which normally converts unconjugated bilirubin to conjugated bilirubin that can be excreted into the gastrointestinal tract.
  - ❷Shorter life span of fetal red blood cells, being approximately 80 to 90 days in a full term infant, compared to 100 to 120 days in adults.
  - ❸ Relatively low conversion of bilirubin to urobilinogen by the intestinal flora, resulting in relatively high absorption of bilirubin back into the circulation.
- Treatment -
  - Phototherapy works through a process of isomerization
  - that changes trans-bilirubin into the water-soluble cis-bilirubin isomer.
  - In phototherapy blue light is used because it is more effective at breaking down bilirubin

Cleft lip or harelip

- Cleft lip का operetion किस उम्र में करते है – 3 माह में
- Cleft palateका operetion किस उम्र में करते है – $1\frac{1}{2}$ –2 वर्ष में
- खण्डौष्ठ का कारण – वायु दोष (वाग्भट)
- खण्डतालु का कारण – वात + पित्त दोष (सुश्रुत)
- Cleft lip Repair - **Rule of Ten**
  - Hb>10gm%
  - age approx :10 weeks
  - Weight >10 lbs
  - TLC<10,000/mm^3

Neonatal Tetanus

- Description: Tetanus is acquired through exposure to the spores of the bacterium Clostridium tetani which are universally present in the soil.
- 8th day disease - Neonatal tetanus
- The disease is caused by the action of a potent neurotoxin produced during the growth of the bacteria in dead tissues, e.g. in dirty wounds or in the umbilicus following non-sterile delivery.
- People of all ages can get tetanus. But the disease is particularly common and serious in newborn babies. This is called neonatal tetanus.
- Prevention: Toxoid as DPT, DT, TT or Td - at least 3 primary doses given by the intramuscular route

बालग्रह

●ग्रहबाधा के कारण–3
1. हिंसा की आकांक्षा (असाध्य)
2. रति की आकांक्षा (कष्टसाध्य)
3. बलि की आकांक्षा (सुख साध्य)

●ग्रहबाधा के पूर्वरूप – (वा.)
1. सततरोदन
2. ज्वर

●भेद–
•8 – हारीत
•9 – सुश्रुत, भावप्रकाश, योगरत्नाकर, माधवनिदान
•12 – वाग्भट, शार्ङ्गधर, बालकुमारतन्त्र (रावणकृत)
•1 – रेवती प्रधान कहा (काश्यप 20 पर्याय बताये) कुल ग्रह10 कहे 'ग्रहस्तु दशकीर्तिता।'
•अपरिसंख्येय – ग्रह चरक ने बतलाये है

●हारीत के अनुसार –8

1. लोहिता	2. रेवती	3. वायसी	4. कुमारी
5. शकुनि	6. शिवाग्रह	7. उर्ध्वकेशी	8. सेना

●सुश्रुत व योगरत्नाकर के अनुसार – 9
पु. –3, स्त्री –6

1. स्कन्द (गृहाधिपति)	4. रेवती	7. शीतपूतना
2. स्कन्दापस्मार	5. पूतना	8. मुखण्डिका
3. शकुनि	6. अंधपूतना(यो.र.–गंधपूतना)	9. नैगमेष (पितृग्रह)

●वाग्भट के अनुसार – 12

पुरुष शरीर धारी –5	स्त्री शरीर धारी –7	
1. स्कन्द	1. शकुनि	6. रेवती
2. विशाख	2. पूतना	7. शुष्क रेवती
3. मेषास्य	3. शीतपूतना	
4. श्वग्रह	4. अदृष्टि पूतना	
5. पितृग्रह	5. मुखण्डिका	

●रावणकृत बालकुमार तन्त्र के अनुसार – 12

1. नन्दा –	1 दिन, 1 माह, 1 वर्ष में	7. शुष्करेवती 7 दिन, 7 माह, 7वर्ष में
2. सुनन्दा –	2 दिन, 2 माह, 2 वर्ष में	8. आर्यका
3. पूतना –	3 दिन, 3 माह, 3 वर्ष में	9. स्वस्तिमातृका
4. मुखमण्डिका–	4 दिन, 4 माह, 4 वर्ष में	10. नित्रृतामातृका
5. कट पूतना –	5 दिन, 5 माह, 5 वर्ष में	11. पिलिपिच्छिका
6. शकुनिका –	6 दिन, 6 माह, 6 वर्ष में	12. कामुकामातृका

●काश्यप के अनुसार –
•काश्यप ने रोगाध्यायसूत्रस्थान 27 में बालग्रह 10 कहे है। लेकिन ओषधमैषजेन्द्रियाध्याय12 में 9 बालग्रहों का ही वर्णन मिलता है।

1. स्कन्द	4. रेवती	7.मुखमण्डिका
2. स्कन्दापस्मार	5. शुष्करेवती	8.पूतना
3. पौण्डरीक	6. शकुनी	9.नैगमेष

•काश्यप ने बालग्रहचिकित्साध्याय में 'रेवती' को ही प्रधान ग्रह माना है एवं रेवती के ही 20 नाम गिनाये हैं।
•रेवती को 'षष्टी ग्रह' भी कहा।

1. वारुणी	6. शुष्का	11. माता	16. रोदनी
2. रेवती	7. षष्ठी	12. शीतवती	17. भूतमाता
3. ब्राह्मणी	8. यमिका	13. कण्डू	18. लोकमातामही
4. कुमारी	9. धरणी	14. पूतना	19. शरण्या
5. बहुपुत्रिका	10. मुखमण्डिका	15. निरुचिंका	20. पुण्यकीर्ति

•काश्यप ने शीतपूतना को कटपूतना भी कहा है।

बालग्रह

क्र.	ग्रह	सुश्रुतानुसार लक्षण	वाग्भटानुसार लक्षण	योगरत्नाकरानुसार लक्षण
1.	स्कन्दग्रह	शूनाक्ष क्षतजसगन्धिक स्तनद्वेषी गाढमुष्टिवर्चा	एक आँख से स्त्राव शिरोविक्षेपते मुहुः, एक ओर का अंग निष्क्रिय,	उर्ध्वदृष्ट्या, दन्तान्खादति रोदनं च अल्पमेव
2.	स्कन्दापस्मार (विशाखा)	निसंज्ञोपुर्नसंज्ञा, करचरणैश्च नृत्यतीव अव्यक्त शब्दों के साथ मलमूत्रत्याग	संज्ञानाशो मुहु, केशलुंचन, उर्ध्वदर्शन फेनोद्वमन, ज्वर,	सुश्रुतोक्त
3.	नैगमेष	फेनवमति, **विनम्यते च मध्ये**, अतिसार, वमन, कास, हिक्का, प्रजागरा	आध्मान, पाणिपाद स्पंदन, फेनवम्य, मुट्ठी भीचना, एक नेत्र में शोफ ओष्ठदंश, उर्ध्व निरीक्ष्य	उर्ध्व पश्येद्दशेद्दन्तात
4.	श्वग्रह (वा.)	–	कण्ठकूजनम, जिह्वादंश,चक्षुर्निमीलनम्, बहिरायमनं, कुत्ते के समान भोंकना	–
5.	पितृग्रह (वा.)	–	**मुहूस्त्रांस**(बार–बार डरना), ज्वर, कास, अतिसार वमन, मुट्ठी भींचना, रोमहर्ष	–
6.	शकुनि	अंगशिथिल, **भय चकित**, स्त्रावयुक्तव्रण, दाह पाकयुक्तस्फोट	जिह्वा, तालु, गले में व्रण, रुक्पाक:, स्फोटसदाह, **मुख व गुदपाक**, ज्वर	
7.	पूतना	वमन, अतिसार, कम्प, रात्रिजागरण, दिन में सुखपूर्वक शयन, ज्वर, प्यास, मूत्रनिग्रह, हिक्का, आध्मान		
8.	शीतपूतना	उद्विग्न, कम्पन, रोदन, सलीन अतिसार, आन्त्रकूजनम	तिर्यगीक्षणम्,एक पार्श्वगर्म दूसराशीत अतिसार, तृष्णा	
9.	अंधपूतना	स्तनद्वेष, वमन, अतिसार, ज्वर, कास, हिक्का, सतत अधःशयन,	पोथकी, नेत्र कण्डु	
10.	मुख– मण्डिका	पाणिपादरमणीयता, ज्वर, ग्लानि **सिरावृतोदरो** **बह्वाशी** (अधिक भोजन करना) सदाउद्विग्न	अरोचक	**प्रसन्नवर्णवदन**
11.	रेवती	शरीर का रंग नीला काला,ज्वरमुखपाक कर्णनासामर्दनम् श्रावव्रण, मल का हरा होना	कासहिक्का, कर्णनासाअक्षिमर्दनम् आँख चलाना,	मलभेद, ज्वरदाह
12.	शुष्क– रेवती(वा.)		सर्वांगक्षय	
13.	पुण्डरीक (काश्यप)	–	–	–

विवेचना

	काश्यपानुसार लक्षण	शरीर की गंध	Systemपर प्रभाव	Feature	आधुनिक मत
	माता का स्वप्न में गंध वाले पदार्थ एवं रक्तवर्णी पुष्प व वस्त्रों को धारण एवं बालक का मोर, मुर्गा, बकरी, भेड़ पर सवारी करते देखना, बिस्तर को रक्त से गीला देखना	वसारक्तगंधी (वा.) रक्तगंधी (सु.&यो.र.)	Nervous	सबसे अधिक,उग्र, बालक की विकलांगता या मरण निश्चित है	Hemiplegia with Facial
	माता का स्वप्न में रक्तवर्णी पुष्प व वस्त्रों को धारण करके एवं शरीर पर रक्तचन्दन का लेप करके भूतों के साथ नृत्य करे	पूयरक्तगंधी	Nervous	–	Epilepsy
	स्वप्न में नक्षत्र, ग्रह, चन्द्र, सूर्य, तारे तथा नैत्रपलक नीचे गिरी हुयी दिखना पूतना सदृश्य लक्षण	बस्तगंध (वा.) वसागंधी (सु.)	Nervous	–	Collapse due to Dehydration
	–	मल जैसी गंध	Nervous	–	Tetanus, Whopping cough, Hydrophopia
	–	शव जैसी गंध	Nervous	–	Cholera
	स्वप्न में मांसभक्षी पक्षियों को देखना	विहङ्गगंधी (सु.) शकुनिगंधी (वा.)		Stomatitis BacillaryDys. Pllegra	Pllegra
	स्वप्न में नक्षत्र, ग्रह, चन्द्र, सूर्य, तारे तथा नैत्रपलक नीचे गिरी हुयी दिखना	काकतुल्यगंधी (सु.) काकवतपूतिगंध (वा.)	GIT	बालातिसार	Epidemic Diarrhoea
	–	वसाविस्त्रगंध (वा.) विस्त्रागोंगंध (सु.)		Weight Loos, Chills, cough	Choleric Diarrhoea
	–	वसागंधी (यो.र.) अम्लगंधी (सु.) मत्स्यगंध,अम्लगंधी(वा.)		Eye disorder	Bacillary Dyscentery
	स्वप्न में बालक को किसी पक्षी के द्वारा काटे जाने से सद्योमरण, आकाश को हरतालवर्णी पीला देखना, मांस सेवन व अलंकारों से धारित देखना	गोमूत्रगंधी (वा.)		----	----
	स्वप्न में बालक को समुद्र आदि में डूबते देखना	बस्तगंध (वा.) पंकगंध (यो.र.)		Green stool	**Pernicious** Anaemia
	स्वप्न में सूखे हुये कुऐं या नदी का दर्शन हो	–		Wasting	**Marasmus**
	धात्री स्वप्न में रक्तपुष्प वाले वन में या अग्नि में प्रवेश करे शिशु अग्नि में जलाया जाय	–	–	–	–

❀काश्यप ने बालग्रहचिकित्साध्याय में अन्धपूतना, शीतपूतना (कटपूतना) की ही चिकित्सा प्रमुखता से कही है।

❀काश्यप ने अन्धपूतना की शीतकारक चिकित्सा एवं अक्षि रोगों के समान चिकित्सा बतलायी है।

❀ •अन्धपूतना ग्रह का वर्णन मिलता है – सुश्रुत में
•गन्धपूतना ग्रह का वर्णन मिलता है – योग रत्नाकर में
•अदृष्टिपूतना ग्रह का वर्णन मिलता है – अष्टांग ह्रदय में

❀असाध्य ग्रह के लक्षण – केशपात, अन्नविद्वेष, रोना, उदर में ग्रन्थि, नानाविधमल, जिह्वा निम्नता मध्ये, श्यावं तालु एवं गिद्ध गंध

❀ ग्रहरोग उपक्रम –•वमन साध्य ग्रह –स्कन्द, स्कन्दापस्मार, पितृग्रह, नैगमेष
•वमन निषेध ग्रह – पौण्डरीक, शकुनी, पूतना, मुखमण्डिका का.सं.चि.7 के अनुसार
•वमन व विरेचन निषेध ग्रह – रेवती

❀ सामान्य कर्म – 1.परिषेक व धूपन
2.अष्टमंगलघृत या अभया घृत
3. दैवव्यापाश्रय चिकित्सा

काश्यप का वेदनाध्याय

क्र.	रोग	लक्षण	अर्थ
1.	अतिसार (Diarrhoea)	देहवैवर्ण्यमरतिर्मुखग्लानिरनिद्रता। वातकर्मनिवृत्तश्चेत्यतीसाराग्रवेदनाः।।	अतिसार – शरीर विवर्ण हो जाता है, अरति, मुखग्लानि तथा अनिद्रा हो जाती है, वायु के कर्मो की निवृत्ति अर्थात् वायु अपना अनुलोमन का कार्य नहीं करती है – ये सब अतिसार के पूर्व लक्षण हैं।
2.	विसूचिका (Cholera)	दह्यन्तेऽगांनि सूच्यन्ते भज्यन्ते निष्टनत्यति। विसूचिकायां बालानां **हृदि शूलं च बर्धते**।।	विसूचिका–बालक के अंगों में दाह होता है, सूचीभेद सदृश्य पीड़ा होती है, उसे सांस लेने में कष्ट होता है,तथा हृदय में शूल होता हैं।
3.	अलसक (Intestinal obstruction)	शिरो न धारयति यो भिद्यते जृम्भते मुहु। **स्तन पिबति नात्यर्थं** ग्रथितं छर्दयत्यपि।। विषादाध्मानारुचिभिर्विद्यादलसकं शिशोः। विसूचिकालसकयोर्दुर्ज्ञाने लक्षणौषधे।।	अलसक–बालक थोड़ी देर भी सिर को ठीक तरह से धारण नहीं कर सकता है, उसके शरीर का भेदन होता है,वह बार बार जंभाई लेता है, अधिक स्तनपान नहीं करता है, ग्रथित वमन कर देता है, तथा विषाद, आध्मान और अरुचि होती है।
4.	उदरशूल (Colic)	**स्तनं व्युदस्यते रौति चोत्तानाश्वावमज्यते**। उदरस्तब्धता शैत्यं मुखस्वेदश्च शूलिनः।।	उदरशूल – बालक स्तन पान करना छोड देता है, वह रोता है, उत्तान लेटता है तथा उदर में स्तब्धता होती है, उसे सर्दी लगती है तथा मुख पर पसीना आ जाता है।
5.	छर्दि (Vomitting)	अनिमित्तमभीक्ष्णं च यस्योद्गारः प्रवर्तते। निद्राजृम्मापरीतस्य छर्दिस्तस्योपजायते।।	छर्दिरोग – बालक को बिना किसी कारण के बार बार डकार आते हों, निद्रा व जंभाई आ रही हो तो ये वमन का पूर्वरुप है।
6.	श्वास (Asthma)	निष्टनत्युरसाऽत्युष्णं श्वासस्तस्योपजायते।	श्वासरोग– श्वासरोग में बालक के छाती से अत्यन्त गरम सांस निकलते है।
7.	हिक्का	**अकस्मान्मारुतोद्गारः कृशे** हिक्का प्रवर्तते।।	हिक्का – कृश व्यक्ति में एक दम वायु की डकार आवे तो हिक्का होने की संभावना होती है।
8.	तृष्णा	**स्तनं पिबति चात्यर्थं** न च तृप्यति रोदिति। शुष्कौष्ठतालुस्तोयेष्सुर्दुर्बलस्तृष्णायाऽर्दितः।।	तृष्णा– अत्यधिक स्तनपान करने पर भी यदि तृप्त नहीं होता तथा रोता रहता हो, और ओष्ठ, तालु सूख गये हों, यदि जल का इच्छुक हो तो जानना चाहिये कि बालक को प्यास लगी है।
9.	आनाह (Flatulence)	**विशालस्तब्धनयनः पर्वभेदारतिक्लमी।** संरुद्धमूत्रानिलविट् शिशुरानाहवेदनी।।	आनाह– जिसकी आंखें फैली व स्तब्ध हों, जिसको पर्वभेद हो, जिसे अरति तथा क्लम हो, जिसके मूत्र, वायु, मल सभी रुक गये हों,
10.	आमदोष	स्तैमित्यमरुचिर्निद्रा गात्रपाण्डुकताऽरतिः। रमणाशनशय्यादीन् धात्रीं च द्वेष्टि नित्यशः।। अस्नातः स्नातरूपश्च स्नातश्चास्नातदर्शनः। आमस्यैतानि रूपाणि विद्याद्वैद्यो भविष्यतः।।	आमदोष– इस रोग में स्तिमितता अरुचि, निद्रा, पाण्डु व अरति होती है तथा बालक को खेल, भोजन, निद्रा तथा धात्री से भी निरन्तर द्वेष हो जाती है। यदि उसने स्नान नहीं किया हुआ है तो स्नान किये हुए के समान प्रतीत होता है, और यदि स्नान किया हुआ है तो स्नान न किये हुए के समान प्रतीत होता है।
11.	जन्तु–दंश (Insect Bite)	स्वस्थवृत्तपरो बालो **न शेते तु यदा निशि**। रक्तबिन्दुचितांगश्च विद्यात्तं जन्तुकादितम्।।	जन्तुदंश (Insect Bite)–स्वस्थ बालक यदि रात्रि में न सोये व उसके किसी अंग पर लाल बिन्दु दिखाई दें तो यह समझना चाहिये कि उसे किसी जन्तु ने काटा है।
12.	पाण्डु (Anaemia)	**नाभ्यां समन्ततः शोथः** श्वेताक्षिनखवक्रता। पाण्डुरोगेऽग्निसादश्च श्वयथुश्चाक्षिकूटयोः।।	पाण्डुरोग – इसमें नाभि के चारों ओर शोथ होता है। नैत्र, नख तथा मुंह सफेद हो जाता है। उसे अग्निमांद्य हो जाता है तथा उसकी आंखों के चारों ओर शोथ हो जाता है।
13.	कामला (Jaundice)	पीतचक्षुर्नखमुखविणमूत्रः कामलार्दितः। उपैत्यन्न निरुत्साहो नष्टाग्निरुधिरस्पृहः।।	कामला –इसमें आंखें,नाखून, मुख, मल, मूत्र पीले हो जाते हैं पाण्डु एवं कामला इन दोनों रोगों में मनुष्य उत्साह शून्य होता है, उसकी **जठराग्नि नष्ट** हो जाती है तथा रुधिर के प्रति उसकी स्पृहा (आकांक्षा अथवा आवश्यकता) होती है।
14.	मदात्यय (Alcoholism)	मूर्च्छाप्रजागरच्छर्दिधात्रीद्वेषारतिभ्रमैः। वित्रासोद्वेगतृष्णाभिर्विद्याद्वाले मदात्ययम्।।	मदात्यय–मूर्छा, जागरण(अनिद्रा) वमन, धात्री से द्वेष, अरति, भ्रम, वित्रास(डर), उद्वेग (वेगों की प्रबलता) तथा तृष्णा के लक्षणों से युक्त
15.	उरोघात (Pleurisy)	स्रोतोभ्यभीक्ष्णं स्पृशति पीनसे क्षौति कासते। उरोघाते तथैव स्यान्निष्टनत्युरसाऽधिकम्।।	उरोघात– इसमें पूर्वोक्त लक्षणों के साथ–साथ बालक छाती से बड़े गरम–गरम सांस निकालता रहता है।

क्र.	रोग	लक्षण	अर्थ
16.	पीनस (Coryza)	मुहुर्मुखेनोच्छ्वसिति पीत्वा पीत्वा स्तनं तु यः। स्रवतो नासिके चास्य ललाटं चाभितप्यते।।	पीनसरोग (प्रतिश्याय)– जो बालक स्तनपान करता हुआ बार बार मुख से श्वास लेता है, नासिका से स्त्राव एवं ललाट तप्त रहता है, स्रोतों को बार–बार स्पर्श करता है, छींकता व खांसता रहता है।
17.	मूत्रकृच्छ्र (Disurea)	रोमहर्षोऽङ्गहर्षश्च मूत्रकाले च वेदना। मूत्रकृच्छ्रे दशत्योष्ठौ बस्तिं स्पृशति पाणिना।।	मूत्रकृच्छ्र – इसमें बालक को रोमहर्ष, अंगहर्ष तथा मूत्रत्याग के समय वेदना होना, ओष्ठदंशन करना तथा बस्तिप्रदेश को स्पर्श करता है।
18.	प्रमेह	गौरवं बद्धता जाडयमकस्मान्मूत्रनिर्गमः। प्रमेहे मक्षिकाका (क्रा)न्तं मूत्रंश्वेतंघनंतथा।।	प्रमेह–इसमें बालक का शरीर भारी, बंधा हुआ, और जड़ होता है। तथा अकस्मात् उसका मूत्र निकल जाता है, जिस पर मक्खियां बहुत बैठती हैं तथा मूत्र का रंग श्वेत एवं धन होता है।
19.	अश्मरी (stones)	सशर्करातिमूत्रत्वं मूत्रकाले च वेदना। प्रततं रोदिति क्षामस्तं ब्रूयादश्मरीगदम्।।	अश्मरी– मूत्र शर्करा से युक्त हो तथा मात्रा में अधिक होता हो, मूत्रत्याग के समय वेदना होती हो, बालक बहुत अधिक और लगातार रोता हो तथा बहुत दुर्बल हो तो अश्मरी रोग समझे
20.	अर्श (Piles)	बुद्धपकपुरीषत्वं सरक्तं या कृशात्मनः। गुदनिष्पीडनं कण्डू तोदं चार्शसि लक्षयत्।।	अर्शरोग–इसमें मल बंधा हुआ, पक्व व साथ में रक्त भी होगा। बालक कृश होगा। उसकी गुदा में वेदना, कण्डू व तोद होगा।
21.	कण्डू	घर्षत्यङ्गानि शयने रोदितीच्छति मर्दनम्। शुष्कण्ड्वऽर्दितं विद्यात्ततश्चार्द्रा प्रवर्तते।।	शुष्ककण्डू (Pruritis)–इस रोग में बालक रात्रि को सोते समय अंगों का घर्षण करता है।वह रोता हुआ शरीर का मर्दन करता है। शुष्क के बाद आर्द्रकण्डू प्रारंभ होती है।
22.	विसर्प	रक्तमण्डलोकत्पत्तिस्तृष्णा दाहो ज्वरोऽरतिः। स्वादुशीतोपशायत्विं विसर्पस्याग्रवेदनाः।।	विसर्प – इस रोग में बालक शरीर पर रक्तमण्डल बन जाते हैं। उसे तृष्णा, दाह, ज्वर, अरति होती है तथा उसे मधु एवं शीत द्रव्यों के सेवन की इच्छा होती है।
23.	शिरःशूल	भृशं शिरः स्पन्दयति **निमीलयति चक्षुषी**। अवकूजत्यर तिमानस्वप्नश्च शिरोरुजि।।	शिरःशूल – शिरःशूल में बालक सिर को बहुत अधिक हिलाता है, आँखें बन्द कर लेता है,रात्रि को सोते समय चिल्लाता है। उसे आहार में ग्लानि हो जाती है तथा उसे नींद नहीं आती है।
24.	चक्षुरोग	दृष्टिव्याकुलता तोदशोथशूलाश्ररक्तताः। सुप्तस्य चोपलिप्यन्ते चक्षुषी चक्षुरामये।।	चक्षुरोग–इसमें दृष्टि व्याकुलता, तोद, शोथ, शूल, अश्रुओं का अधिक आना और लालिमा होती है। सोने पर वर्त्म परस्पर चिपक जाती हैं।
25.	कर्णवेदना	कर्णौ स्पृशति हस्ताभ्यां शिरो भ्रमयते भृशम्। अरत्यरोचकास्वप्नैर्जानीयात् कर्णवेदनाम्।।	कर्णवेदना–कर्णवेदना में बालक हाथों से कानों का स्पर्श करता है, सिर को बहुत हिलाता है, उसे ग्लानि, अरुचि और नींद नहीं आती है।
26.	मुखरोग	लालास्रवणमत्यर्थं स्तनद्वेषारतिव्यथा। **पीतमुग्दिरति क्षीरं** नासाश्वासी मुखामये।।	मुखरोग–मुखरोग में बालक के मुख से अत्यन्त लालास्राव होता है, दुग्ध से द्वेष हो जाता है, उसे ग्लानि व व्यथा होती है, पीयेहुए दूध को उगल देता है तथा नासिका से श्वास लेता है।
27.	अधिजिह्विका	लालास्रावोऽरुचिर्ग्लानिः कपोले श्वयथुर्व्यथा। मुखस्य विवृतत्वं च जानीयादधिजिह्विकाम्।।	अधिजिह्विका –इसमें लालास्राव, अरुचि, ग्लानि, कपोल पर शोथ तथा पीड़ा होती है और मुख खुला रहता है।
28.	कण्ठवेदना	**पीतमुग्दिरति स्तन्यं** विष्टम्भिश्लेष्मसेवनम्। ईषज्जवरोऽरुचिर्ग्लानिः कण्ठवेदनायाऽर्दिते।।	कण्ठवेदना–गले की वेदना में बालक पीये हुए दूध को उगल देता है, श्लेष्मवर्धक पदार्थो के सेवन से उसे विष्टम्भ हो जाता है, हल्का ज्वर, अरुचि तथा ग्लानि हो जाती है।
29.	कण्ठशोथ	कण्डू(ण्ठ)श्वयथुः कण्ठेज्वराः अरुचिशिरोरुजः।।	कण्ठशोथ – कण्ठ में शोथ, अरुचि, तथा शिरःशूल होता है।
30.	गलग्रह	ज्वरारुचिमुखस्रावा निष्टनेच्च गलग्रहे।	ग्रहरोग–ज्वर, अरुचि, लालास्राव तथाश्वास लेने में कष्ट होता है।
31.	अपस्मार	**अकस्मादट्टहसनम**पस्माराय कल्पते।	अपस्मार – इसमें बालक सहसा अट्टहास करने लगता है।
32.	उन्माद	प्रलापारतिवैचित्र्यैरुन्मादं चोपलक्षयेत्।	उन्माद–इसमें प्रलाप,अरति तथा वैचित्य (चित्तभ्रम) हो जाता है।
33.	ज्वर	मुहुर्नमयतेऽङ्गानि जृम्भते कासते मुहुः। धात्रीमालीयतेऽकस्मात् स्तनंनात्यभिनन्दति प्रस्रावोष्णत्ववैवर्ण्य ललाटस्यातितप्ता। अरुचिः पादयोः शैत्यं ज्वरे स्युः पूर्ववेदनाः।।	ज्वर – इसमें बालक बार–बार अंगों को सिकोड़ता है, जंभाई लेता है, बार–बार खांसता है, सहसा धात्री से चिपक जाता है, स्तन या दूध की विशेष इच्छा नहीं करता, मुख से लालास्राव होता है, उसका शरीर उष्ण तथा विवर्ण (सफेद या पीला) रहता है, ललाट गरम रहता है, अरुचि होती है तथा उसके पैर ठण्डे होजाते है।

महत्वपूर्ण बिन्दु

❀Father of Modern pediatrics is - Galen
❀शिशु हेतु दूध की औसत मात्रा है –150ml/ Kg body wt./day
❀Anti. Fontanelle बन्द हो जाता है – 18 माह में
❀Post. Fontanelle and Sphenoid बन्द हो जाता है – 2 से 4 माह में
❀Post. Lateral(mastoid) बन्द हो जाता है – 1वर्ष में
❀Neonate का weight दुगना हो जाता है – 5 माह में (3गुना –1वर्ष में)
❀Neonateकी Hight दुगनी हो जाती है – 4 वर्ष में
❀Sex of the foetus can be determined by 12th weeks
❀Foetus can survive after 210 days of gestational period.
❀Pre term baby - Less than 37 completed weeks of gestation
❀Post term baby - More than 42 weeks of gestation
❀Act 1969 to provide for the regulation of registration of births and death.
❀According to act 1969 registration of births and death should be done within 14 days.
❀नवजात में Male Child अधिक भारी व लम्बे होते हैं।
❀नवजात के सिर व शरीर का अनुपात 1/4 होता है (व्यस्क में 1/7)
❀नवजात शिशु प्रथम दिन 30 – 60 ml मूत्र त्याग करता है।
❀चरक संहिता मे बालरोग चिकित्सा सिद्धांत योनिव्यापत चिकित्सा 30/283 में किया गया है।
❀वाग्भट ने बालक की चेष्टा से रोगज्ञान का संकेत किया है–

- •शिरःशूल – अक्षिनिमीलनात्
- •हृदपीड़ा – जिह्वौष्ठदशन
- •उदरशूल – स्तनदंश, पृष्ठनमन
- •बस्तिशूल – विण्मूत्रसंग, त्रास

❀वाग्भट ने औष्ठदशन हृदपीड़ा में जबकि काश्यप ने मूत्रकृच्छ्र में बतलाया है।
❀क्षीरालसक – धात्री एवं बालक का वमन करायें
❀कुकूणक – •काश्यप– धात्री का वमन व विरेचन,
•सुश्रुत – बालक का वमन
•वाग्भट् – बालक का वमन एवं विरेचन करायें
❀वाग्भट ने वालकों के समस्त रोगों के लिये 'रजन्यादि चूर्ण' का वर्णन किया है।
बालस्य सर्वरोगेषु पूजितं बलवर्णदम्।
❀वाग्भट ने वालकों एवं गर्भिणी के अभ्यंग के लिये 'लाक्षादि तैल' का वर्णन किया है।
यक्षराक्षसभूतघ्नं गर्भिणीनां च शस्यते।
❀ •पीतमुग्दिरति क्षीरं.....– मुखरोग
•पीतमुग्दिरति स्तन्यं .....– कण्ठवेदना
❀ •शिरो भ्रमयते भृशम् – कर्णवेदना
•भृशं शिरः स्पन्दयति – शिरःशूल
•शिरो न धारयति – अलसक
•शिरोविक्षेपते मुहुः – स्कन्दग्रह
❀ •स्तन पिबति नात्यर्थं – अलसक
•स्तनं पिबति चात्यर्थं – तृष्णा

बालकों में औषधि मात्रा

❀औषध मात्रा ज्ञान – Posology

❀काष्ठौषधि की मात्रा–

☛सुश्रुत –
- •क्षीरप – चुटकी भर
- •क्षीरान्नाद – कोलास्थि (बेर की गुठली) के बराबर
- •अन्नाद – कोल (बेर) के बराबर

☛विश्वामित्र –
- •जातमात्र – विडंग के समान
- •क्षीरप – बेर की गुठली के बराबर
- •क्षीरान्नाद – बेर के बराबर
- •अन्नाद – उदुम्बर के बराबर

☛काश्यप – •जातमात्र हेतु – विडंग फल मात्र, मधु + सर्पि से
•मात्रा शिशु की वृद्धि के अनुसार बढ़ाये, आमलक के परिणाम से अधिक नहीं दें।

☛शार्ङ्गधर – •प्रथम मास – 1 रत्ती
•द्वितीय मास से 1 वर्ष तक –1–1 रत्ती प्रति मास बढ़ाते हुए 1 माशा तक
•1 वर्ष से 16 वर्ष तक –1–1 माशा बढ़ाते हुऐ कुल 16 माशा तक
•16 वर्ष से 70 वर्ष तक – 16 माशा स्थिर रखें तत्पश्चात बालक की मात्रा के समान धीरे–धीरे घटायें।

Note - यह मात्रा चूर्ण व कल्क की है क्वाथ की इससे चौगनी होगी

❀औषध मात्रा के आधुनिक सूत्र –

Fried's Rule - $\text{औषध मात्रा} = \frac{\text{सामान्य मात्रा X शिशु की आयु माह में}}{150}$

Clark's Rule - $\text{औषध मात्रा} = \frac{\text{सामान्य मात्रा X शिशु का भार पौण्ड में}}{150}$

Young's Rule - $\text{औषध मात्रा} = \frac{\text{सामान्य मात्रा X शिशु की आयु वर्ष में}}{\text{शिशु की आयु वर्ष में} + 12}$

❀वस्ति मात्रा– बालकों में
- •निरुह वस्ति 3 वर्ष के बालक में – 3 कर्ष = 3 तोला
  4 वर्ष के – 4 तोला (1पल)
  6–18 वर्ष के – 8 तोला (1प्रसृत)
- •अनुवासन वस्ति 1–6 वर्ष तक – 1/4 मात्रा निरुह वस्ति की = **1तोला**
  6–18 वर्ष तक – 1/4 मात्रा निरुह बस्ति की = **2तोला**

बालकों में औषधि के प्रमुख योग

क्र.	योग	अधिकार	मात्रा	प्रमुख घटक/भावना
1.	बालचातुर्भद्र चूर्ण (भै.र.)	ज्वर,अतिसार,कास,वमन	2–8रत्ती	नागरमोथा, पिप्पली, अतीस, कर्कटश्रंगी
2.	बालार्क रस(रसो.त.)	बाल रोग	1 रत्ती	खर्परभस्म,प्रवाल,श्रृंग,हिंगुल, केशर
3.	दन्तोद्भेदगदान्तकरस(भै.र.)	ज्वर, आक्षेप, अतिसार	3रत्ती(1वल्ल)	अभ्रक,शंखभस्म,लौह,स्वर्णमाक्षिक
4.	कुमारकल्याण रस	बाल रोग		स्वर्ण, घृतकुमारी स्वरस भावना
5.	अरविन्दासव	बाल रोग	3 से 12 ml	कमल, शर्करा, मधु, मुनक्का
6.	बालवटी	अतिसार,कास,वमन	1 रत्ती	कच्छपभस्म, जहरमोहरापिष्टी, केशर
7.	भद्रमुस्तादि क्वाथ(यो.र.)	बाल रोग – ज्वर		
8.	हरिद्रादि क्वाथ(च.द.)	बाल रोग		
9.	अष्टमंगलघृत(भै.र.)	बाल रोग		
10.	बालपंचभद्ररस(सि.यो.सं)	बाल रोग–पाण्डु,शोष	2–4रत्ती	रससिन्दूर,यशदभस्म,गोदन्ती, गोरोचन,गंधक
11.	बालपंचामृत रस(र.र.स.)	बाल रोग,दीपन,पाचन		शुण्ठी, पिप्पली, हरीतकी, सौंफ, शु.हींग

Dr. kirti kumar akhand

Fetal Circulation

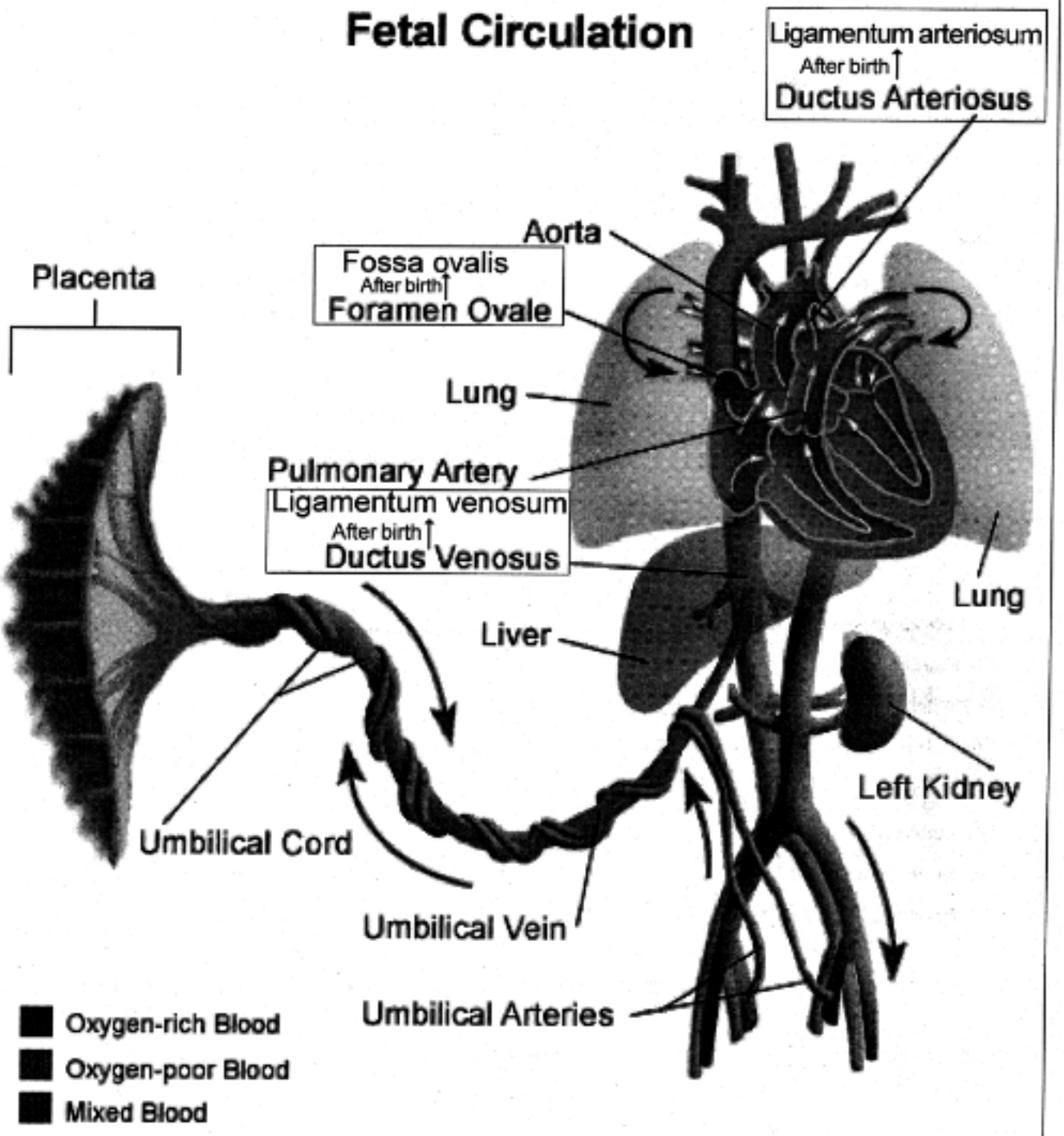

- In normal newborns, the ductus arteriosus(DA) is substantially closed within 12-24 hours after birth, and is completely sealed after three weeks.
- Foramen ovale of child is functionally closed at the time of birth but anatomically it close 1 years after birth.
- Umbilical arteries supply deoxygenated blood from the fetus to the placenta in the umbilical cord. There are usually two umbilical arteries present together with one umbilical vein in the cord.(A^2V)
- Umbilical artery is branches of internal iliac arteries.
- The pressure inside the umbilical artery is approximately 50 mmHg.

❀NEONATAL REFLEXES

Reflex	Stimulation	Response	Age of Appear	Age of Disappear
1.Moro reflex (startle reflex)	Sudden move; loud noise	throws out arms and legs & then pulls them toward body	at birth	3 months
2.Stepping reflex	Infant held upright with feet touching ground	Moves feet as if to walk	at birth	6 weeks
3.Placing reflex	held erect and the dorsum of the foot is drawnalong the under edge of a table top	Flexion followed by extension of the leg	at birth	6 weeks
4.Sucking reflex	Mouth touched by object	Sucks on object	at birth	3 -4 months
5.Rooting reflex	Cheek stroked or side of mouth touched	Turns toward source, opens mouth and sucks	at birth	3 -4 months
6. Prone crawl reflex	Placing the neonate prone (face down) on a flat surface	crawl forward using the arms and legs	at birth	3 -4 months
7.Palmar grasp	Palms touched	Grasps tightly	at birth	6 months
8. Plantar Grasp or Babinski reflex	Sole of foot stroked	Fans out toes and twists foot	at birth	10 months
9.Tonic neck reflex	Placed on back	Makes fists and turns head to the right	2 months	6 months
10. Landau reflex	held in the prone position		3 months	24 months
11. Neck righting			4-6 months	24 months
12. Parachute reflex			9 months	Persists

♦Landau reflex -when an infant is held in the prone position, the entire body forms a convex upward arc; gentle pressure on the head or gravity flexes the neck and hip, reversing the arc.

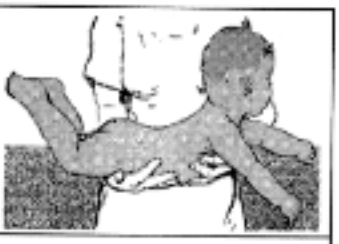

♦Parachute reflex - occurs in the slightly older infant, and is elicited by holding the child upright then rotating the body quickly face forward (as if falling). The arms are reflexively extended as if to break a fall even though this reflex appears long before walking.

❀Gross motor developmental milestone

Age	**Milestone**
3 Months	Neck holding
5 Months	Sitting with support
8 Months	Sitting without support
9 Months	Standing with support
10 Months	Walking with support
11 Months	Crawling (Creeping)
12 Months	Standing without support
13 Months	Walking without support
18 Months	Running
24 Months	Walking upstairs
36 Monts	Riding tricyle

❀Language Development Milestone-

Age	**Milestone**
1 Months	Turns head to sound
3 Months	Cooing
6 Months	Ma, Ba, Monosyllables
9 Months	Mama, Baba Bisyllables
12 Months	Two words with meaning
18 Months	Ten words with meaning
24 Months	Simple sentence
36 Months	Telling a story

❀Personal social developmental milestone-

Age	**Milestone**
2 Month	Social smile
3 Month	Recognizining mother
6 Month	Smile at minor image
9 Month	Waves bye-bye
1 Year	Plays a single ball game
3 Year	Knowns gender
18 Month	Feed it self

❀ Bladder control -

Diurnal	12-16months,
Nocturnal	$2\frac{1}{2}$ to 3 years

❀DIFFERENC BETWEEN MARASMUS and KWASHIORKER-

Feature	Marasmus	Kwashiorker
1. Deficiency	Carbohydrate	Protein
2. Weight	below 60%	below 80%
3. Oedema	absent	present
4. Considered *to be*	Adaptation syndrome	disadaptation syndrome
5. Face	Monkey face	Moon face
6. Mental features	Alert and irritable	Apathetic, lethargic
7. Hair	Dry	easily pluckable.**Flag sign**
8. Skin	Dry	dermatosis pigmentosa
9. Appetite	Voracious 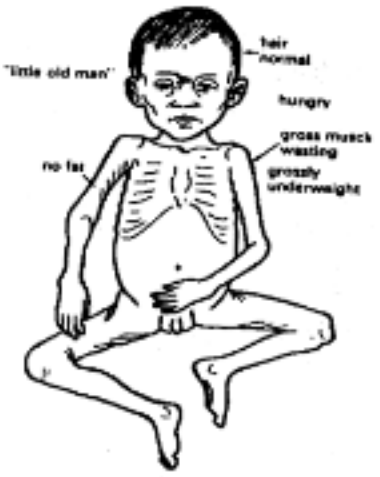	Poor 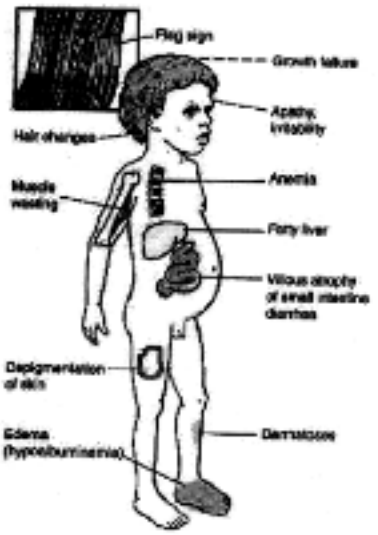

❀ COMMON CAUSATIVE AGENT

S.no	Disease	Causative agent	another point
1.	Diarrhoea	Rotavirus	faecal-oral route
2.	Croup (laryngotracheobronchitis)	Para influenza type I	
3.	Epiglottitis	Hemophilus influenzae	
4.	Tonsillitis & pneumonia	Streptococci	
5.	ASOM in children below 6yrs in older children	H. Influenzae Pneumococci	
6.	Emphyema (common in infancy)	Staphylococci	
7.	Measels	Pera mixovirus	Koplik's spots in buccal

❀ CHARACTERISTIC FEATURES OF PNEUMONIA

S.no	Causative agent	Characteristic feature
1.	Pneumococci	Rusty sputum & Lobar pneumonia
2.	Staphylococci	Pneumatocele formation and associated Emphyema
3.	Pneumocystis Carinii	seen in immuno-defficient patient
4.	Mycoplasma	interstitial pneumonia (progressive scarring of both lungs)

काश्यप संहिता

सूत्र स्थान –

•गर्भिणी के अन्नसेवन से निर्मित रस के तीन भाग –
1.एक भाग माता की पुष्टि हेतु
2.एक भाग गर्भ की पुष्टि हेतु
3.एक भाग स्तनों की पुष्टि हेतु

•प्रकृति भेद – (3) वातस्थूणा, पित्तस्थूणा, कफस्थूणा

•प्रकृति के अनुसार ही औषध कल्पना की गयी है।

•जातमात्र हेतु औषध मात्रा – विडंग फल मात्र, मधु + सर्पि से

•मात्रा शिशु की वृद्धि के अनुसार बढ़ाये, आमलक के परिणाम से अधिक नहीं दें।

•लेहन के योग्य – अक्षीरा जननी, अल्पक्षीरा, दुष्टक्षीरा, दुष्प्रजाता, व्याधिपीड़ित, वात+पित्त प्राधानता वाला शिशु, दीप्तानि, अल्पमूत्रपुरीष त्यागने वाला शिशु, तीन दिन तक भी मल का त्याग नहीं करने वाला शिशु।

•लेहन के अयोग्य – मन्दजठराग्नि, निद्रालु, कल्याणमातृक, उर्ध्वजत्रुगत विकारी, छर्दि, अरुचि, कामला, पाण्डु, हृद्रोग, गुदबस्त्युदरामयं, ग्रहरोगी व अलसक से पीड़ित बालक।

•पूर्वामुखी होकर सुवर्णप्राशन कराये बालक 1 मास में मेधावी व 6 मास में श्रुतधरः हो जाते है।

•कल्याणक घृत, पंचगव्य घृत व ब्राह्मी घृत लेहनार्थ देते है।

•अभय घृत – ग्रहबाधाहरणार्थ

•संवर्धन घृत – पंगु व मूक शिशुओं में उपयोगी

•दूषित दुग्ध एवं ग्रहदोष –

धात्री दुग्ध रस		ग्रह से आक्रान्त शिशु
कटु, तिक्त	–	शकुनी ग्रह से आक्रान्त
सान्निपातिक	–	स्कन्द व षष्टी ग्रह से आक्रान्त
मधुर व कटु	–	पूतना ग्रह से आक्रान्त

• दूषित दुग्ध का प्रभाव –

मधुर रस	–	बहुविण्मूत्रता
कषाय रस	–	मूत्रविड्ग्रह
तैलवर्णी	–	बलवान शिशु
घृतवर्णी	–	महाधनः
धूम्रवर्णी	–	यशस्वी
शुद्ध स्तन्य	–	सर्वगुणोदितः

दूषित स्तन्य चिकित्सा –
•धात्री का नित्य संशोधन
•बाजीकारक औषध सिद्ध स्नेहपान

• क्षीरजननार्थ द्रव्य – मधुर अन्नपान, द्रवपदार्थ, लवण, सीधुरहित मद्य, सिद्धार्थक छोड़ अन्य शाक, लशुन, पलाण्डु, मांसरस (सूअर व माहिष मांस को छोड़कर)

• स्तनकीलक – •कारण – पीतयज्ञा
•लक्षण – स्तम्भः स्रावश्च कुचयोः सिराजालेन संततः।
शोथशूलरुजादाहैः स्तनः स्प्रष्टुं न शक्यते।।
•चिकित्सा – प्रथम उपक्रम – घृतपान,
पक्व होने पर – विद्रधिवत पाटन क्रिया

• दन्त संख्या (32) – 8 सकृज्जात (केवल 1 बार उत्पन्न होने वाले) एवं 24 (द्विज)

• दँत संख्या –कुल 32 यथा – •हानव्य – 20
•राजदन्त – 4
•वस्त – 4
•दंष्ट्रा – 4

• राजदन्त के खण्डित होने पर मनुष्य श्राद्ध करने योग्य नही रहता है।

• लड़कियो के दाँत जल्दी निकलते है व पीडा भी कम होती है, लड़को के दाँत स्थिर व घन होने से देरी से निकलते है।

• विकृत दन्तोत्पत्ति शान्त्यर्थ मारूति इष्टि यज्ञ का विधान है।

• हीनांग/अधिक अंग होने पर **स्थालीपाक प्राजापत्य इष्टि** का निर्देश है।

- विभिन्न महीनों में निकले दाँतों के लक्षण –
  - •चतुर्थ महीने में – दुर्बल, आशु क्षयिण, आमय बहुल
  - •पंचम महीने में – स्यन्दनाश्च (हिलने वाले), प्रहर्षिण
  - •षष्टम महीने में – प्रतीपाश्च–टेढ़े, मलग्राहिण, घुनद (कीडे लगे हुए)
  - •सप्तम महीने में – द्विपुटा, स्फोटिन, राजिमन्त (रेखाओं से युक्त), खण्डाश्च, रुक्ष, विषम, उन्नत
  - •अष्टम महीने में – सर्वगुणसम्पन्न दन्तोत्पति
- दाँतो के जड़ो में गर्भ के समय जो रक्त निषिक्त होता है वही रक्त दाँतो को उत्पन्न करता है।
- कर्णवेधन को धर्मकामार्थ सिद्धये बतलाया गया है।
- विरेचनार्थ श्रेष्ठ द्रव्य – एरण्ड एवं शंखिनी
- स्नेह की प्रविचारणाऐ – 20
- वंक्षण व संधिपर मध्य स्वेद का विधान है।
- अतिस्विन्न की विसर्पवत रक्षा करने का निर्देश है।
- जन्म से ही बालको में अष्टविध स्वेद का निर्देश किया है –

  हस्तस्वेदः प्रदेहश्च नाडीप्रस्तरसंकरा।
  उपनाहोऽवगाहश्च परिषेकस्त्थाऽष्टम।।
- हस्तस्वेद – जातस्य चतुरो मासान् हस्तस्वेदं प्रयोजयेत्।
- आर्थिक दृष्टि से बालक के तीन भेद बतलाकर तद्नरुप चिकित्सा का निर्देश –1.सुकुमार 2. मध्यम 3. दरिद्र
- अजीर्ण व चिकित्सा –

अजीर्ण		चिकित्सा
आमाजीर्ण	–	आमोद्धरण (लंघन)
विदग्धाजीर्ण	–	दिवाशयन
श्लेष्माजीर्ण	–	स्वेदन
रसशेषाजीर्ण	–	शोषण

आमस्योद्धरणं पथ्यं विदग्धे प्रावृतः स्वपेत्।
सश्लेष्माणि भवेत् स्वेदःपरिशोष्यो रसाधिके।।

- चिकित्सा के चतुष्पाद– भिषक, भेषजम, आतुर, परिचारक
- चतुष्पादो में रोगी को श्रेष्ठ माना है, लेकिन चिकित्सा का मूल वैद्य है एवं परिचारक की गणना अन्त में की है।
- वृद्ध जीवक ने रोगों की संख्या असंख्य एवं कश्यप ने दो ही भेद (निज व आगन्तुज) माने है।
- चिकित्सा का प्रयोजन – अव्याहतशरीरायुरभिवर्धेत वा कथम्।
  इत्यर्थं भेषजं प्रोक्तं विकाराणां च शान्तये।।
  1. शरीर तथा आयु की वृद्धि 2. उत्पन्न रोगों की शान्ति
- वात का स्थान – अस्थि, मज्जा में, विशेषेण पक्वाशय
- कफ का स्थान – मेद, शिर, उरः, ग्रीवा, सन्धि, बाहु, विशेषेण ह्रदयम्
- पित्त का स्थान – आमाशय, स्वेद, रक्त, लसिका में, विशेषेण आमाशय
- योनि भेद –
  - •शकटाकार योनि – सन्तानोत्पत्ति हेतु श्रेष्ठ
  - •मध्यनिबिडा योनि – कन्या उत्पादक
  - •उन्नत व मांसल योनि – पुत्रोत्पादक
- मनोभाव – यथावक्त्रं तथा वृत्तं यथा चक्षुस्तथा मनः। •Face is the index of mind
  यथास्वरस्तथा सारो यथा रूपं तथा गुणाः।। (काश्यप)
- त्रिविध सत्व –
  1. सात्विक – श्रेष्ठ – कल्याण – 8 (प्राजापत्य सत्व चरक से अधिक)
  2. राजस – मध्य – क्रोध – 7 (याक्ष सत्व चरक से अधिक)
  3. तामस – अधम – मोह – 3 (चरक के समान ही)
- सार – (9) **ओजसार** चरक से अतिरिक्त माना है।

विमान स्थान –

- आयुर्वेदावतरण – ब्रह्मा → अश्विनौ → इन्द्र → 1. काश्यप 2. वशिष्ठ 3. भृगु 4. अत्रि
- चारो वर्णों को आयुर्वेद अध्ययन का अधिकार दिया।
- दोषो में आश्रित देव –
  - •वात – मारूत + आकाश
  - •पित्त – अग्नि + आदित्य
  - •कफ – सोम + वरूण

❀SOME PAEDIATRIC PROBLEMS AND THEIR MANAGEMENT-

PROBLEM	APPEARS AT	MANAGEMENT
1. Erythema toxicum	2nd or 3rd day	Disappears by itself
2. Vaginal bleeding	between 3 to 7days	Not required
3. Epstein's pearls	seen on hard palate	-------
4. Breast engorgement	3rd or 4th day	Not necessary
5. Physiological jaundice	36 hrs after birth	disappears by 7 days

❀COMMONEST CAUSES-

1. Haemoptysis in child	Pneumonia
2. Hematemesis in infancy	Acute Duodenal ulcer(stress & sepsis)
3. Bleeding per Rectum- Infants	Fissure in ano
Children	Polyp
4. Common cause of constant crying in a baby	Hunger
5. Large intestinal obstruction in infancy	Hirschsprung's disease

❀ COMMONEST CONDITIONS-

1. Commonest malignancy in children	Leukaemia
2. Commonest bone tumor in children	Osteogenic sarcoma
3. Commonest brain tumor in children in India (space occupying lesion)	Tuberculoma

❀ MISCELLANEOUS-

1. Commonest paediatric complaint	U. R. T. I.
2. Fever in child commonly due to	U. R. T I.
3. Commonest emergency in newborn	Resuscitation
4. Pneumonia in child commonly due to	Viral infection
5. Commonest site of intestinal atresia	ileum

❀COMMONEST CONGENITAL ANOMALIES-

1. Commonest type of Tracheo-oesophageal fistula	Upper end is blind & lower end communicates with Trachea
2. Anorectal anomalies	Anal agenesis
3. anomalies of male Urethra	Hypospadias
4. Thalassemia	BetaThalassemia
5. Heriditary enzyme defect of RBC	G 6 PD deficiency
6. Larynx	Laryngomalacia
7. Kidney	Polycystic kidney
8. Congenital hydrocephalus	Aqueductal stenosis

National Immunization schedule

- Porgramme of Immunization was launched in india - 1978
- The Government of India launched the Universal Immunization Program (UIP) in 1985

Eligibility	Vaccine/s
At Birth	BCG OPV – 0 Hepatitis – B
6 weeks of age	OPV – 1 **Pentavalent vaccine** – 1 **Rota virus** – 1 (in AP, Orissa, Haryana and HP only at present)
10 weeks of age	OPV – 2 **Pentavalent vaccine** – 2 **Rota virus** – 2 (in AP, Orissa, Haryana and HP only at present)
14 weeks of age	OPV – 3 **IPV** **Pentavalent vaccine** – 3 **Rota virus** – 3 (in AP, Orissa, Haryana and HP only, at present)
9 months of age	Measles Vitamin A – first dose
16 – 24 months of age	DPT – first Booster OPV booster Measles 2nd dose Vitamin A – second dose followed by every 6 months till 5 yr. age JE (in endemic districts only)
5 – 6 years of age	DPT second booster
10 and 16 years of age	TT

❀A pentavalent vaccine (DTP-HepB-Hib) is a combined vaccine with five individual vaccines. The main example is a vaccine that protects against Diphtheria, tetanus, whooping cough, hepatitis B and Haemophilus Influenza type B (a bacterium that causes meningitis, pneumonia and otitis).

❀OPV given soon after birth is called zero polio. Total of maximum 5 polio doses are administered in the first year of life.

❀**Mission Indradhanush** will ensure that all children under the age of two years and pregnant women are fully immunized with all available vaccines.

❀Government of India launched Mission Indradhanush in December 2014.

❀ STORAGE OF VACCINES IN REFRIGERATOR

1. Top shelf - OPV & Measles vaccine
2. Middle shelf - BCG, DPT, TT & Diluents
3. Lower shelf - Water bottels

❀ VACCINES THAT CAN BE FROZEN -

1. BCG 2. Polio 3. Measles 4. Yellow fever

❀ VACCINES THOSE CAN NOT FROZEN -

1.DPT 2. TT 3.Typhoid

शारीर स्थान –

- ऋतुऐं – 5 (रसप्रयोजनार्थ ऋतुऐं – 6)
- प्रथममास में – गर्भाशय में पुरुष के शुक्राणु के चारों ओर आर्तव फैल जाता है।
- द्वितीयमास में –शुक्र से अस्थि, मांस का निर्माण हो कर स्नायु का निर्माण होता है।
- तृतीयमास में – दौहृदावस्था, चेतना व वेदना का अनुभव
- अष्टममास में –मुर्हुग्लाना मुर्हुहृष्टा च गर्भिणी
- कुण्डलिनी चक्र गर्भाशय से सम्बन्धित है।
- वर्णानुसार अलग–अलग ऋतुकाल बताया है –
  •ब्राह्मणी – 12 दिन, •क्षत्रिय – 11 दिन •वैश्य – 10 दिन, •अन्य – 9 दिन
- काश्यप ने कृमिआशय भी माना है।
- उदक प्रमाण – 10 अंजली
- ओज प्रमाण – 6 अंजली
- प्रत्यंग 87 बतलाये है।
- रोमकूप 2 लाख एवं रोम भी 2 लाख बतलाये है।
- स्रोतस द्विविध– 1. सूक्ष्म – नाभिश्च रोमकूपश्च सूक्ष्मस्त्रोतांसि निर्दिशेत।
  2. महान – नव स्रोतस
- मूल सिराये(मातायें)– 10 इसमें 4 ऊर्ध्व, 4 अधो एवं 2 तिर्यक सिरायें होती है।
- स्त्री एवं पुरुष में 16 वर्ष की अवस्था में आर्तव व शुक्र पूर्णरूपेण प्रवर्त्तित हो जाता है।
- सहवास से पूर्व पुरूष क्षीरघृत एवं स्त्री तैल एवं माष का सेवन करे ।
- गर्भिणी की योनि से – किंशुकोदक संकाशं स्राव – पुत्री की उत्पत्ति होगी
  तन्त्री वर्णी (गिलोय के रस सदृश्य) स्राव – पुत्रोत्पत्ति होगी।
- प्रसवावस्था में व्यायाम निषिद्ध बताया है।
- प्रसव वेदना में "एकपादो यमकुले पाद एक इह स्थितः।" कहा जाता है, अर्थात प्रथम प्रसव के समय गर्भिणी का एक पैर इस लोक में व दूसरा पैर मृत्युलोक में होता है ऐसा काश्यप मानते है।

इन्द्रिय स्थान –

- द्विविध चिकित्सा – •औषध चिकित्सा – दीपन आदि औषधियों से कृत चिकित्सा
  •भेषज चिकित्सा – होम, व्रत, तप, दान, शान्तिकर्म आदि (औषध व भेषज में अन्तर बताया है)
- ओषधभैषजेन्द्रियाध्याय में 9 बालग्रहों का वर्णन मिलता है।
  1. स्कन्द 2. स्कन्दापस्मार 3. पौण्डरीक 4. रेवती 5. शुष्करेवती
  6. शकुनी 7.मुखमण्डिका 8.पूतना 9.नैगमेष
- स्वप्न भेद – 10

चिकित्सा स्थान –

- ज्वर चिकित्सा – प्रथम चार माह गर्भिणी को औषधियाँ निषेध है।
- गर्भिणी चिकित्सा –मातुलुंग निम्बु स्वरस + सैन्धव – हृत्शूल की श्रेष्ठ औषध
- प्रियंगु, पिप्पली, भद्रमुस्तक, हरेणु, मधु तथा बेर – षडंग हृदयौषधम
- दुष्प्रजाता चिकित्सा – त्रैवृत योग – प्रसूता में वातजन्य उपद्रव्य में अंजन, पान, अभ्यंग हेतु
- पूतना के पर्याय – मलजा, पूतना, कौंजी, वैश्वदेवी, पावनी
- ग्रहो में रेवती(20 पर्याय) को प्रमुख है अतः सूतिका षष्ठी में रेवती **(षण्मुखी)** की पूजा की जाती है।
- अन्धपूतना की शीतकारक चिकित्सा एवं अक्षि रोगों के समान चिकित्सा करते है।
- हलीमक चिकित्सा – बलातैल, कुमारकल्याणघृत, अगस्तहरीतकी
- उदावर्त भेद – 6 माने है (वात, विण्ड, मूत्र, शुक्र, छर्दि, क्षवथु) • नाराचक चूर्ण प्रयोग – अर्श, उदावर्त व अनाह में। मात्रा – विडाल (1कर्ष) अनुपान – उष्णजल, मद्य, दुग्ध, गोमूत्र
- पिप्पली वर्धमान प्रयोग – 12 वर्ष पुराने राजयक्ष्मा, वातकफज रोगों में

- नागबला रसायन – उपद्रवयुक्त शोष में, आयु बल मेधा वृद्धि एवं 6 मास में श्रुतधर हो जाता है।
- शरद ऋतु के प्रारम्भ में नागबलामूल उखाड़कर नागबला रसायन बनायें।
- नागबला रसायन की तरह मण्डुकपर्णी, शुण्ठी, ब्राह्मी व मुलेठी का भी प्रयोग करें।
- राजयक्ष्मा में योग – महाभयारिष्ट (200हरड़), इन्द्राणीघृत (100पल लशुन), पीलू घृत, द्राक्षा घृत
- गुल्म भेद – 5 एवं गुल्म के पूर्वरुप – अग्निनाशोऽरुचिः शूलंच्छर्युद्गारान्त्रकूजनम् पुरीषवर्तनं कार्श्यं गुल्मानां पूर्वलक्षणम्।
- वातज गुल्म में दशांगघृत, षटपल घृत, शैशुक घृत का वर्णन किया है।
- मूत्रकृच्छ्र के 8 भेद कहे है, यथा – वातज, पित्तज, कफज, रक्तज, वातपित्तज, वातकफज, पित्तकफज, सन्निपातज
- काश्यप ने मूत्रकृच्छ्र को मूत्राघात शब्द से लिख कर रोगाध्याय 27 में आठ भेद बतलाये है।
- काश्यप के अनुसार मूत्रकृच्छ में पित्त की प्रधानता है, तथा वायु के स्थान इसके आश्रय है
- प्रमेह पिडिका भेद – 8 (अरूंषिका चरक से अतिरिक्त मानी है)
- अरिकीलक नामक रोग भी माना है जिसकी आकृति कर्कन्धु या गोस्तनप्रख्या मानी गयी है।
- प्रतिश्याय रोग से सूर्यावर्त्त की उत्पत्ति मानी है
- उरोघात 4 प्रकार का माना है।
- कृमि चिकित्सा में गुदा में सषर्प तैल+सैंधव लगाकर अंगुली से स्वेदन करने का विधान बताया है।
- मद्यपान जन्य त्रिविध रोग – 1. पानात्यय 2. विभ्रम 3. पानापक्रम
- मद्यसेवन योग्य रोग – स्तन्यक्षय, शीतज्वर, विषमज्वर, सूतिका, दुष्प्रजाता, योनिभ्रंश, दन्तजन्मनि, वातश्लैश्मिकरोग में
- फक्क रोग – बालः संवत्सरा पादाभ्यां यो न गच्छति।।
- फक्क भेद – (3) 1. क्षीरज – श्लेष्मिक दुग्धा धात्री (फक्कदुग्धा) से
  2. गर्भज – धात्री के पुनः गर्भिणी हो जाने से
  3. व्याधिज – ज्वरादि के कारण
- वातपित्त प्रकृति, पटुक्षीरा (लवणयुक्तदुग्ध), पटुप्रजा (संतान अधिक हो)उसके दुग्ध सेवन से बालकों में पंगुता, मूकता व जड़ता आ जाती है।
- फक्क लक्षण – विशीर्णह्रष्टरोमा, स्तब्धरोमा, महानखः, दुर्गन्धी, मलीन व क्रोधी बालक
- फक्क चिकित्सा – •कल्याण घृत, षटपलघृत या अमृतघृत से 7 रात्रि पर्यन्त स्नेहन तदन्तर त्रिवृतक्षीर से शोधन करवाते है, शोधनोपरान्त ब्राह्मी घृत का सेवन करें।(ब्राह्मी घृत का सेवन शूद्रों में निषेध)
  •राजतैल का प्रयोग – पंगुत्व व बन्धत्व का नाश
  •त्रिचक्र रथ (फक्क रथ) का प्रयोग
- धात्री – सुखं दुःखं ही बालानां धात्रीमूलमसंशयम्।
- धात्री को क्षार/क्षार प्रधान औषध प्रयोग का निषेध बताया है।
- मेदस्वनी धात्री की सिराकर्म करने का विधान है।
- धात्री की सदैव अजीर्ण रोग से रक्षा करनी चाहिए।
- धात्री को बला तैल के अभ्यंग का विधान है।
- रास्ना तैल, सहचर तैल, श्योनकतैल, मीनतैल के अभ्यंग का भी विधान है।
- दुष्कारिणः (दुष्कर कार्य करने वाले) – 3 1.भिषक 2.धात्री 3.बालक

सिद्धि स्थान –

- गार्ग्य के अनुसार बालक को जन्म से, आत्रेय के अनुसार 4 मास की अवस्था से एवं भेल के अनुसार 6 वर्ष की अवस्था से तथा काश्यप के अनुसार जब बालक अन्न ग्रहण करने लग जाये तब से अनुवासन बस्ति देनी चाहिए।
- शोधन काल में शूल होने पर हस्त स्वेद (चार मास की अवस्था में) का एवं 6 वर्ष से अधिक के बालक में पटस्वेद का निर्देश है।
  हस्तस्वेदं च शूलेषु बालकानां विधापयेत्।
  षड्बर्षप्रभृतीनां तु पटस्वेदः प्रशस्यते।।
- वमन निषिद्ध – अर्धावभेदक, सूर्यावर्त, रेवती, पुण्डरीक, शकुनी, पूतना, मुखमण्डिका में
- वस्तिकर्म हेतु – शिशुस्नेह "शैशुको नाम स स्नेहो बस्तिकर्मणि शस्यते।बालानां सर्वरोगघ्नो.....।।"

कल्प स्थान –

- धूपकल्प, लशुनकल्प, कटुतैलकल्प, षटकल्प, शतपुष्पाशतावरीकल्प, रेवतीकल्प, भोजनकल्प, विशेषकल्प, संहिताकल्प का वर्णन।
- कुमार धूप – बालकों की वृद्धि हेतु
- माहेश्वर धूप – ग्रहरोगनाशक
- दशांग धूप – सर्वरोगहर विशेषकर अपस्मार, ग्रह, उपग्रह रोगों में
- चतुरगिंक धूप – घृत, वसा, मज्जा, लाक्षा से निर्मित – अल्पदोष वाले कृश बालक व ग्रहविकार में
- शिशुक धूप – सर्वग्रहनाशक
- कुल 40 धूपो का वर्णन है,
- धूप के आश्रय – (2) स्थावर, जांगम
- धूप के कर्मभेद से 3 प्रकार – धूप, अनुधूप, प्रतिधूप
- लहसुन कल्प नाम से पूर्ण अध्याय दिया गया है।
- लहसुन की उत्पत्ति इन्द्राणी के उद्‌गार से मानी गयी है, अमृत इसका पर्याय है एवं यह ब्राह्मणों के लिए निषिद्ध है।
- लहसुन गुण –

काश्यप	भा.प्र.
बीज – कटुरस	कन्द – कटु
पुष्पनाल – लवण व तिक्त	पत्र – तिक्त
पत्र – कषाय	पुष्पनाल – कषाय
	नालाग्र – लवण
	बीज – मधुर

- लशुन सेवन से लाभ –1. ग्राम्यधर्मोद्‌भव रोग नही होते
  2."न जातु बन्ध्या भवति न जात्यप्रियदर्शन।"
- लशुन सेवन काल में शीतल उपचार निषिद्ध है अन्यथा जलोदर हो जाता है।
- लशुन सेवन काल में गोरस, इक्षुविकार, अहितकरभव एवं मूली का सेवन भी वर्जित है।
- लशुन मात्रा – •निकृष्ट मात्रा –4 पल •मध्यम मात्रा – 6 पल •श्रेष्ठ मात्रा – 8 या 10पल
- लशुन सेवन हेतु माह – पौष व माघ (नवनीतकम् में चैत्र व वैशाख)
- लशुन के प्रकार – गिरिज – श्रेष्ठ एवं क्षेत्रज
- कटु तैल प्लीहानाशनार्थ श्रेष्ठ बताया गया है।
- प्लीहोदरी को कल्याणक घृत या षटपल घृत से स्नेहन कराके कटुतैल पान कराना चाहिये।
- कटु तैल मात्रा – •ज्येष्ठ मात्रा – 12 पल •मध्यम मात्रा – 6 पल •ह्रस्व मात्रा – 4 पल
- षटकल्प अध्याय में वर्णित कल्प –

अक्षिरोग हेतु	
	हरीतकी – विकासिनी
	चक्षुष्या – चक्षुष्य
	रोचना – पक्ष्मवर्धनी
	पुष्पक – दृष्टि प्रसादन
	रसांजन – पक्ष्मजननं, चक्षुष्य
	निर्मली बीज – शीतल व दृष्टि प्रसादक, चक्षुष्य

- पाँचभौतिक तैल – पंचेन्द्रिविवर्धनम (नस्य के रूप में सेव्य)

शतपुष्पाशतावरीकल्प –

- 100 पल की मात्रा में शतपुष्पा कल्क का सेवन करने से यथेष्ट पुत्र की प्राप्ति मानी गयी है।
- 1 मास पर्यन्त 1 कर्ष शतपुष्पा चूर्ण मधु + घृत से सेवन करने से मनुष्य श्रुतधर हो जाता है।
- शतपुष्पा सेवन से लाभ – अपि बन्ध्या च षण्ढा च सूयेते शतपुष्पया।

रेवतीकल्प –

- जातहारिणी आक्रमण से रक्षार्थ काम्येष्टि यज्ञ का विधान किया गया है।
- जातहारिणी 3 प्रकार की है – 1. साध्य – 10, 2. याप्य –16 3. असाध्य– 8
- जीवित माताओं में 10 जातहारिणियाँ मानी गयी है, जो कि साध्य है।
- 16 याप्य जातहारिणियां मानी गयी है, गर्भ की स्थिरता हेतु एवं गर्भपात के भय के निवारणार्थ गर्भिणी में 8वें मास के पूर्व **वरण बंध** बांधने का विधान बताया गया है।
- लोक भेद से जातहारिणियां 3 प्रकार की मानी गयी है – दैवी, मानुषी, तिरश्चीन

- तिरश्चीन के 5 भेद किये गये है – शकुनी, चतुष्पदी, सर्पा, मत्सी, वनस्पति
- निश्चित ही संतानोत्पति हेतु प्रजावरण बन्ध का निर्देश किया गया है।

भोजनकल्प –

- कुक्षि के 3 भाग –1भाग पानी, 1भाग भोजन व 1भाग वात के लिये।

विशेषकल्प –

- ज्वर– सर्वदोषविराधाच्च दुश्चिकित्स्यो महागदः।
- कूटपाकल सन्निपात ज्वर लक्षण – त्रिरात्रं परमतस्य जन्तोर्भवति जीवितम्
- सन्निपात ज्वर में कफस्थानानुपूर्वी चिकित्सा का निर्देश है।
- सभी सन्निपातों में मधु (शीतोपचारी होने से) सेवन निषिद्ध बताया गया है। सन्निपातों में शीतोपचार विरुद्ध है।
- कटुसर्पि – सान्निपातिक ज्वर चिकित्सार्थ।

संहिताकल्प –

- संहिता की विषय वस्तु कल्पस्थान के अंतिम अध्याय में है, इसे 8 स्थानों वाली व 120 अध्यायों वाली संहिता कहा है।
- रोग की उत्पत्ति सतयुग व त्रेता के मध्य मानी गयी है।

खिल स्थान –

- काश्यप ने बिषम ज्वर के 7 भेद कहे है – संतत आदि + प्रेतज्वर, ग्रहोत्थज्वर
- सतत आग्नेय, द्वितीयक वायव्य, तृतीयक वैश्वदेव तथा चतुर्थक ऐशान होता है।
- बिषम ज्वर चिकित्सा में नीलकण्ठ व बृषध्वज महादेव का पूजन विधान है।
- ओसो नाम रसः सोऽस्या धीयते यत्तदोषधिः। ओज रस को कहते है, रस जिसमें धारण किया जाता है, वह औषधि है।
- औषध कल्पना – 7 (चूर्ण + अभिसव कल्पना चरक से अतिरिक्त)
- औषध काल – 10
- 12 वर्ष से कम आयु पर औषध का निरन्तर प्रयोग निषिद्ध है।
- वय विभाजन –
  - •गर्भ – जन्म तक
  - •बाल(क्षीरप) – 1 वर्ष तक
  - •कुमार(अन्नाद) – 1–16 वर्ष तक
  - •यौवन – 34 वर्ष तक
  - •मध्यम – 70 वर्ष तक
  - •वृद्ध – 70 वर्षपर्यन्त तक
- घृत की मात्रा –
  - • जातमात्र हेतु घृत की मात्रा – कोलास्थि प्रमाण मे
  - • 5 तथा 10 दिन तक उससे कुछ अधिक
  - • 20 दिन तक की अवस्था में – कोलार्ध प्रमाण में
  - • एक मास – कोलमात्रं
  - • 2 मास तक उससे कुछ अधिक एवं तीसरे मास में –द्विकोल
  - • 4 मास में – शुष्कामलकमात्रं
  - • 5 व 6 मास में – आद्रामलकसमितम
- द्विविध रोग – शरीर (व्याधि), मानस (आधि)
- चूर्ण की मात्रा –
  - • दीपनीय चूर्ण – अग्र पर्वांगुलि मात्रा में
  - • जीवनीय व संशमनीय चूर्ण – द्विगुण
  - • वमन व विरेचक चूर्ण – दीपनीय चूर्ण से अर्द्ध मात्रा मे
- क्वाथ की मात्रा–
  - • वामक व विरेचनीय क्वाथ – 1 प्रसृत = 8 तोला
  - • दीपनीय व संशमनीय क्वाथ – 2 प्रसृत
- कल्ककी मात्रा –
  - • वामक व विरेचनीय कल्क – $\frac{1}{2}$ अक्ष = $\frac{1}{2}$ कर्ष = $\frac{1}{2}$ तोला
  - • दीपनीय कल्क – 1 अक्ष
  - • जीवनीय व संशमनीय कल्क – 2 अक्ष
- औषध मात्रा ही चिकित्सा का मूल है (मात्रा मूंल ही चिकित्सितम्)
- अविज्ञात औषध – यथा विषं यथा शस्त्रं यथाऽग्निरशनिर्यथा। तथौषधमविज्ञातं विज्ञतममृतोपमम्।।
- आहार –सर्वभूतानामाहारः स्थिति कारणम्।
- अन्न आहार – प्राणिनां प्राणधारणं।
- आहारो महाभैषज्यं उच्यते।

Dr. kirti kumar akhand

- यूष के 25 भेद एवं दोषानुसार 75 एवं रस आश्रय के अनुसार 50 भेद बताये है।
- सप्तयवागुदोष– 1. गाढ़ी 2. पतली 3. ठण्डी 4. चावल की कमी 5. पिच्छिल 6. विशद 7. अह्रद्य
- दीर्घोपवासिनां नृणां क्षीरपेया प्रशस्यते।
- कालादि भेद से आहार के 24 भेद है।
- चतुर्विध कुक्षि – 2 भाग – अन्न सेवन
  1 भाग – द्रव सेवन
  1 भाग – वायु संचरणार्थ
- भोजन के पश्चात 1 मुर्हुत तक आराम करने एवं 100 कदम चलने का निर्देश है।
- हितकर व अहितकर एक साथ भोजन करना – समशन
- पूर्व भोजन का पूरा परिपाक न होने पर भी पुनः भोजन करना – अध्यशन
- क्षुधा व तृष्णा के नष्ट हो जाने एवं अग्नि के शान्त हो जाना – प्रमृताशन
- गुणों के संस्कार और सात्म्य क्रम के बदल जाना – विषमाशन
- दोषानुसार रस सेवन क्रम –
  कफज व्याधि में – कटु, तिक्त, कषाय रस सेवन (क्रम से)
  पैत्तिक व्याधि में – तिक्त, स्वादु, कषाय।
  वातिक व्याधि में – लवण, अम्ल व मधुर रस सेवन
- रोगावस्था मे स्नेहन के तीसरे दिन वमन एवं चौथे दिन विरेचन करवाना चाहिए।
- वमन कषाय का प्रमाण – उत्कृष्ट मात्रा –4 अंजलि, मध्य मात्रा –3 अंजलि, हीन मात्रा –2 अंजलि
- विरेचन कषाय का प्रमाण – उत्कृष्ट मात्रा –2 अंजलि, मध्य मात्रा –$1\frac{1}{2}$ अंजलि, हीन मात्रा –1 अंजलि
- विरेचनार्थ एरण्डतैल की श्रेष्ठता – गन्धर्वतैलं वा श्रेष्ठं स्नेहविरेचनम्।
- कर्म बस्ति (30)– शरीर में बल अधिक होने पर
- काल बस्ति (15) – बल मध्यम, तथा वायु के साथ पित्त का संसर्ग होने पर
- योग बस्ति (8) – वायु के साथ कफ का संसर्ग होने पर
- न तैलात परं किन्चित द्रव्यम अस्ति **अनिलापहम्**।
- पुरूष में 7 आशय एवं स्त्रियो में 8 आशय माने है।
- गर्भिणी का पर्याय अन्तर्वत्नी भी बताया है।
- गर्भिणिनां ज्वरः कष्टः सर्वव्याधिषु
- गर्भिणी मे तीक्ष्ण अन्नपान, स्वेदन व व्यायाम निषिद्ध है। केवल यवागु का सेवन करना चाहिये।
- चार मास से पूर्व गर्भिणी मे औषध प्रयोग निषिद्ध है। (चरक आठ मास तक निषिद्ध मानते हैं)
- नस्यादानेन गर्भिण्याः प्राणस्तु परिहीयते।।
- गर्भिणी को शिरोविरेचन देने से वात प्रकूपित होकर गर्भघात होता है।
- गर्भिणी के 6 वे महीने में ग्रन्थि, पिडिका, शोथ एवं रोहिणी की विशेष चिकित्सा करनी चाहिए।
- गर्भिणी के 7 वे महीने में क्षारकर्म, अग्निकर्म आदि शस्त्रकर्म का विधान है।
- कल्याणकावलेह – सर्वअतिसार नाशक
- प्रसव से पूर्व त्रिवृत मणि को श्रोणि में धारण करने का एवं प्रसव के पश्चात शिर पर धारण करने का विधान है।
- प्रसूता स्त्री को उष्ण बला तैल से भरी चमडे की आसन्दी में बैठने का निर्देश है।
- प्रसूता को प्रसव के 1 मास तक विशेष आहार विहार का सेवन करना चाहिये।अर्थात 1 माह में वह स्वस्थ्य हो जाती है।
- पुत्र होने पर प्रसूता को तैलपान एवं पुत्री होने पर धृतपान का निर्देश है।
- रोगरहित होने पर प्रसूता की रसादि धातुएँ 6 मास में अपनी पूर्वावस्था में लौट आती है।
- प्रसूता स्त्रियों में ज्वर 6 प्रकार के होते है –वातज, पित्तज, कफज, सन्निपातज, स्तन्योत्थ, ग्रहोत्थ
- प्रसूता स्त्री के स्तनो में तीसरे या चौथेदिन दूध आता है।
- दुष्प्रजाता व्याधियो (सूतिका रोग) की चिकित्सा मुख्यतया स्नेह द्वारा ही होती है।

- शिशु –
  - •प्रथम मास – सूर्योदय दर्शन व चन्द्रदर्शन
  - •चतुर्थ मास – निष्क्रमण संस्कार
  - •षष्टम मास – फलप्राशन
  - •दशम मास – अन्नप्राशन
- कुकुणक – दूषित स्तन्यजन्य व्याधि है, कफ एवं रक्त दोष प्राधान्य से होती है
  - •लक्षण – ललाटमक्षिकूटं च नासां च परिमर्दति। नैत्रेकण्डूयतेऽभीक्ष्णं पाणिनां चाप्यतीव तु।।
    स प्रकाशं न सहते अश्रु चास्य प्रवर्तते। वर्त्मनि श्वयथुश्चास्य जानीयात तं कुक्कुणम्।।
  - •चिकित्सा – •धात्री – वमन व दोष पाचन
    •शिशु – नैत्र प्रक्षालन
    •कोकिला गुटिका व लोहितिका गुटिका – नैत्ररोगो में उपयोगी
- दुःसह सुकुमाराणां कुमाराणां विशेषतः – विसर्प रोग
- चर्मदल (पर्याय – उत्पात रोग) व्याधि केवल क्षीरप एवं क्षीरान्नाद बालको को ही होती है।
- अम्लपित्त (पर्याय – शुक्तक) स्वतंत्र अध्याय के रुप में वर्णित है।
- अम्लपित्त में श्रेष्ठ चिकित्सा – वमन है।
- अम्लपित्त प्रायः आनूप देशवासियों को होता है इसमें जांगल देशीय औषधियों से चिकित्सा करते है। चिकित्सार्थ देशान्तर गमन का भी निर्देश है।
- नवायसलौह, कटुकबिन्दु अवलेह एवं पिप्पली वर्धमान – शोथनाशक
- क्षीर प्रकार– अष्टविध (हस्तिनी का क्षीर नही मानकर स्त्री दुग्ध को दो बार पढ़ा है)
- गर्भिणी में शीतल जल का प्रयोग वर्जित बताया है।
- मांस के गुण – गर्भधानकरं मांसमन्ते पुष्टिकरं तथा।गर्भिणीनां च नारीणां वातप्रशमनं परम्।।
  गर्भाणां च बालानां सरसं परमौषधम।।
- काश्यप के कुछ विशेष योग–
  - •त्रैवृत योग – सूतिका उपद्रव
  - •महाभयारिष्ट – श्लैष्मिक राजयक्ष्मा
  - •इन्द्राणी घृत – राजयक्ष्मा
  - •राज तैल – पंगुत्व एवं बन्धत्व
  - •मीन तैल – वातव्याधि में
  - •सहचर तैल – वातव्याधि में
  - •श्योनक तैल – वातव्याधि में
  - •पांचभौतिक तैल – पंचइन्द्रियों की शक्ति के लिये
  - •फल तैल – निरुह के उपद्रव में, अनुवासन में उत्तम, कटिपृष्ठगुदवंक्षणशूल
  - •कोकिला गुटिका – नैत्र रोगों में
  - •लोहितिका गुटिका – नैत्र रोगों में
  - •अभय घृत – ग्रहबाधाहर
  - •संवर्धन घृत – पंगु, मूक, बधिर बालकों में सदा मधु के साथ
  - •शैशुक घृत – वातज गुल्म
  - •दशांग घृत – वातज गुल्म
  - •कटुकबिन्दु अवलेह – शोथनाशक

'आयुर्वेदांश' श्रृंखला की एक कड़ी–

संक्षिप्त कौमारभृत्य

(Short notes for Ayurved Entrance Examination)

डॉ.अखिलेश भारद्वाज
एम.एस.(शल्य)
बनारस हिन्दु विश्वविद्यालय

डॉ.उपासना भारद्वाज
एम.डी.(का.चि.)
विक्रम विश्वविद्यालय

आयुर्वेदांश' श्रृंखला की अन्य पुस्तक–

- संक्षिप्त आयुर्वेद का इतिहास
- संक्षिप्त पदार्थ विज्ञान
- संक्षिप्त रचनाशारीर Short Anatomy
- संक्षिप्त क्रियाशारीर Short Physiology
- संक्षिप्त रसशास्त्र (संक्षिप्त रसरत्नसमुच्चय सहित)
- संक्षिप्त भैषज्यकल्पना
- संक्षिप्त द्रव्यगुण
- संक्षिप्त अगदतन्त्र एवं व्यवहारायुर्वेद
- संक्षिप्त स्वस्थवृत्त
- संक्षिप्त कौमारभृत्य(संक्षिप्त काश्यपसंहिता सहित)
- संक्षिप्त प्रसूतितन्त्र एवं स्त्रीरोग
- संक्षिप्त कायचिकित्सा
- संक्षिप्त शल्यतन्त्र
- संक्षिप्त शालाक्यतन्त्र
- संक्षिप्त चरक संहिता
- Short Pathology &Pharmacology

'आयुर्वेदांश' श्रृंखला की पुस्तकों की विशेषतायें–

- मुख्य आधार ग्रन्थों के अध्ययन के पश्चात सम्पूर्ण आयुर्वेद पाठ्यक्रम का पुनः अध्ययन अल्प समयावधि में।
- गूढ़ विषय एवं अध्ययन सामग्री को सरल तालिका के रूप में प्रस्तुतिकरण।
- प्रत्येक पुस्तक में संबधित विषय के विभिन्न आयुर्वेद प्रवेश परीक्षाओं में पूछे गये प्रश्नो का समावेश।

पुस्तक प्राप्ति स्थल–
डी–7 साइट नं.–1
सिटी सेन्टर
ग्वालियर (म.प्र)–474011

सम्पर्क सूत्र–
मो.नं.–09406502975